खाड़ी प्रवास, सामाजिक प्रेषण और धर्म
केरल के ईसाइयों की परिवर्तनशील गतिशीलता

गिनू ज़कारिया ऊमन

रिपोर्ट
वरिष्ठ अध्येतावृत्ति कार्यक्रम
2015

प्रकाशक :-
भारतीय प्रवासन केन्द्र
विदेश मंत्रालय
कमरा सं. 1011, अकबर भवन,
यशवंत पैलेस, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली - 110021
दूरभाष : +91-11-24675341, ई-मेल - icm.moia@gmail.com
वेबसाइट: http://www.mea.gov.in/icm.htm

प्रवासन के लिए भारत केन्द्र (आईसीएम)

प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय (एम ओ आई ए) ने मंत्रिमंडल के अनुमोदन से वर्ष 2008 में प्रवासन के लिए भारत केन्द्र की स्थापना एक 'अलाभकारी' संस्था के रूप में की थी जो 'अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन' संबंधी सभी मामलों पर विदेश मंत्रालय, भारत सरकार के एक रिसर्च थिंक टैंक के रूप में कार्य करता है। वर्तमान मे यह केन्द्र अकबर भवन, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली में स्थित है। यह केन्द्र अनुभूतिमूलक, विश्लेषणात्मक और नीति संबंधी शोध पर काम करता है और भारत से लोगों के एक समनुगत और सुसंगत तरीके से कार्य हेतु सुविचारित नीति आयोजना और कार्यनीतिक अंतराक्षेपण हेतु प्रलेखनीय सदव्यवहार की परियोजना है।

वरिष्ठ अध्येतावृत्ति कार्यक्रम

अध्येतावृत्ति कार्यक्रम के अंतर्गत, प्रवासन के लिए भारत केन्द्र (आईसीएम) भारत से अंतर्राष्ट्रीय उत्प्रवास, विशेष रूप से भारत से अंतर्राष्ट्रीय उत्प्रवास अथवा संबंधित विषयों, जिनका लोगों की अंतरदेशीय आवाजाही से संबंध हो, के क्षेत्र में कार्यरत शिक्षाविद, पेशेवर, अकादमी सदस्य और नीति निर्माताओं की सेवाएं लेता है। यह अध्येतावृत्ति नीति संबंधी शोध करने अवसर देती है, जिसमें ऐसी सूचना प्रदान करना शामिल है, जो कि विदेश मंत्रालय के लिए उपयोगी हों।

पत्राचार के लिए पता

प्रवासन के लिए भारत केन्द्र
विदेश मंत्रालय
कमरा सं. 1011, अकबर भवन,
यशवन्त पैलेस, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-110021
दूरभाष: +91-11-24675341, ई-मेल- icm.moia@gmail.com
वेबसाईट: http://www.mea.gov.in/icm.htm

डिज़ाइन और सृजन: प्रवासन के लिए भारत केन्द्र

© प्रवासन के लिए भारत केन्द्र, 2016.आईसीएम द्वारा मुद्रित, डिजाइन व परिचालित

खाड़ी प्रवास, सामाजिक प्रेषण और धर्म
केरल के ईसाइयों की परिवर्तनशील गतिशीलता

गिनू ज़कारिया ऊमन

रिपोर्ट
वरिष्ठ अध्येतावृत्ति कार्यक्रम
2015

प्रकाशक :-
भारतीय प्रवासन केन्द्र
विदेश मंत्रालय
कमरा सं. 1011, अकबर भवन,
यशवंत पैलेस, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली - 110021
दूरभाष : +91-11-24675341, ई-मेल - icm.moia@gmail.com
वेबसाइट: http://www.mea.gov.in/icm.htm

विशिष्ट सार

इस लेख में खाड़ी देशों से सीरियाई ईसाई समुदाय की वापसी के मामले पर चर्चा के साथ-साथ केरल में ईसाई धर्म की परिवर्तनशील गतिशीलता पर चर्चा की गई है। इस लेख में जीसीसी देशों से केरल लौटने वाले प्रवासी सीरियाई ईसाइयों की बदलती धार्मिक प्रथाओं, सिद्धांतों तथा धार्मिक कृत्यों (रिचुअल्स) पर चर्चा की गई है। यह कुवैत तथा केरल - दोनों जगह किए गए फील्डवर्क पर आधारित एक अनुभवसिद्ध शोध है।

सीरियाई ईसाई समुदाय केरल की कुल जनसंख्या का 18.6 प्रतिशत है। इसमें विभिन्न संप्रदाय यथा - सीरो-मालाबार, मालांकारा कैथोलिक, जैकोबियन, ऑर्थोडोक्स सीरियाई चर्च, मार्थोमाइट, काल्धाई, कैनानाई तथा प्रोटेस्टेंट सीरियाई शामिल हैं। पूर्व में, यह समुदाय केरल के 5 या 6 जिलों में तथा इनके आसपास संकेन्द्रित था। हालाँकि, उच्च शिक्षा दर, व्यावसायिक विविधताओं, समुदाय में कम स्थानीय रोजगार के अवसरों के कारण सीरियाई ईसाइयों ने भारत के अन्य राज्यों के साथ-साथ विदेशों की ओर भी प्रवास किया है।

खाड़ी देशों की ओर परिक्रामी प्रवास से प्रवासियों का मूल समाज के साथ संपर्क सुदृढ़ हुआ है और इसके परिणामस्वरूप मूल समाज और धार्मिक प्रथाओं और प्रकृति में जबर्दस्त परिवर्तन आया है। शोधकर्ता ने पाया कि प्रवास और प्रेषण का केरल के सीरियाई ईसाइयों की धार्मिक प्रथाओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है।

प्रेक्षण:

- **इस लेख में केरल के सीरियाई ईसाइयों के प्रवास केन्द्रित धार्मिक पुन:अभिमुखीकरण (री-ओरिएंटेशन) का विश्लेषण किया गया है जिसमें धर्म का वस्तुकरण, सांप्रदायिक पहचान की दृढ़ता, अतिवादी (रेडिकल) धार्मिक समूहों का प्रसरण, 'संपन्नता ईसोपदेश' (प्रोस्पेरिटी गोस्पेल) का उदय तथा सीरियाई ईसाई समुदाय में उपासना के नए रूपों का उभरना शामिल है।**
- **वर्तमान में, सीरियाई ईसाई अपने प्रवास से अर्जित आर्थिक पूंजी से अपने मूल समाज में सामाजिक प्रतिष्ठा, स्थिति तथा वैधता अर्जित करने के लिए धर्म का प्रयोग कार्यनीतिक मंच के तौर कर रहे हैं।**
- **सामान्य तौर पर, खाड़ी देशों में प्रवास करने वालों में अधिकांश लोग मध्य वर्ग या निर्धन वर्ग से संबंध रखते हैं। केरल से प्रेषण के एक महत्वपूर्ण भाग का सांस्कृतिक पहलुओं नामत: शादियों, शिक्षा, चर्चों आदि में निवेश किया गया है।**
- **मुख्यत: धार्मिक कृत्यों तथा मृत्यु समारोहों का वस्तुकरण किया गया और बढ़ती हुई पारिवारिक आय तथा धन का विषय बना दिया गया। धार्मिक समारोहों, शादियों, पुण्यतिथियों, ईसाई**

अप्रवासियों के मध्य शादियों पर बड़ी मात्रा में धन खर्च किया जाने लगा है। इससे स्थानीय सामाजिक व्यवस्था में परिवार की सामाजिक प्रतिष्ठा और प्रशंसा बढ़ती है।

- धार्मिक प्रथाएँ अमेरिकी ईवेंजेलिकल विचारों के प्रभाव से मुक्त होती जा रही हैं। सीरियाई चर्चों की पारंपरिक, पूर्वोमुखी तथा पदानुक्रम प्रकृति को कमजोर ताने-बाने वाली 'नव-पेंटीकोस्टलवाद' तथा 'वाणिज्यिक ईसाइयत' से बदल दिया गया है।
- कुछ धार्मिक अवधारणाएँ हैं यथा - टाइद, टेली ईवेंजेलिस्ट, गोस्पेल चैनल, प्रार्थना व उपासना, होली लैंड (इजराइल) तीर्थयात्रा, 'बिबलिकल इजराइज' की धारणा जोकि अमेरिकी ईवेंजेलिकल धर्मशास्त्र (थियोलॉजी) में शुरु हुई। ये केरल के सीरियाई ईसाइयों में काफी प्रचलित हैं। मजेदार बात यह है कि अमेरिकी ईवेंजेलिकल विचार केरल में खाड़ी प्रवासियों द्वारा ही प्रचलित किए गए हैं।
- इजराइल/फिलिस्तीन की तीर्थ यात्रा एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है जो कि सीरियाई अप्रवासियों के मध्य व्यापक रूप से प्रचलित है। वर्तमान में, इजराइल/ फिलिस्तीन (होली लैंड) की तीर्थ यात्रा अत्यधिक लोकप्रिय है और केरल से प्रति वर्ष हजारों की संख्या में अनुयायी इन पवित्र स्थलों की तीर्थ यात्रा करने इजराइल जा रहे हैं। जीसीसी देशों के लगभग सभी चर्च प्रति वर्ष विशेषकर गर्मी की छुट्टियों के दौरान जॉर्डन के रास्ते होली लैंड की तीर्थ यात्रा का आयोजन करते हैं।
- टाइद ओल्ड टेस्टामेंट की अवधारणा है जिसमें निर्धनों और जरूरतमंदों के लिए आय के दसवें हिस्से का अंशदान किया जाता है। यह पहले लोकप्रिय नहीं थी किंतु हाल ही में यह आर्थिक सफलता प्रदान करने के लिए धन्यवाद देने हेतु सीरियाई ईसाई प्रवासियों में लोकप्रिय हुई है। इससे चर्चों की वार्षिक आय पिछले तीन दशकों में 300 गुना बढ़ी है।
- सीरियाई ईसाई केरल में ईसाई धर्म के नियमों और प्रथाओं का दृढ़तापूर्वक पालन कर रहे हैं। हालाँकि, केरल की समाजवादी-साम्यवादी विरासत का ईसाई समुदाय पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। इसके अतिरिक्त, विशेषकर कैथोलिक में चर्च के पदानुक्रम की कम्यूनिस्ट पार्टी के साथ अनबन थी। कई बिशपों और क्लर्जियों ने मार्क्सवादी विचारों का खुलकर समर्थन किया था तथा चर्च के नेतृत्व में मुक्ति धर्मशास्त्र (लिबरेशन थियोलॉजी) का बहुत प्रभाव है।

खाड़ी प्रवास, सामाजिक प्रेषण और धर्म

केरल के ईसाइयों की परिवर्तनशील गतिशीलता

गिनू ज़कारिया ऊमन

परिचय

भारत के दक्षिणी राज्य केरल की धार्मिक स्थिति विलक्षण है। मुस्लिम और ईसाई कुल जनसंख्या का लगभग 40 प्रतिशत हैं जो कि जनसंख्या की शेष भारत से भिन्न पद्धति है। 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में सामाजिक परिवर्तनों के साथ-साथ नव-प्रचलित साम्राज्यवादी अर्थव्यवस्था ने केरलवासियों को श्रीलंका, सिंगापुर तथा मलयेशिया (मलय) के बागानों में लिपिकों और कुलियों के रूप में प्रवास करने के लिए प्रेरित किया।

खाड़ी देशों में तेल की खोज तथा 1970 में परवर्ती तेल क्रांति ने केरल से प्रवास का उफान आ गया। वर्तमान में, केरल राज्य खाड़ी देशों में सबसे अधिक संख्या में अप्रवासी भेजता है। 'खाड़ी प्रवास' से राज्य की अन्यथा कमजोर रोजगार स्थिति हेतु जीवन की एक नई आशा पैदा हुई तथा वर्तमान में विभिन्न खाड़ी देशों में लगभग 2.28 मिलियन केरलवासी काम कर रहे हैं। प्रवास के परिणामस्वरूप केरल ने भिन्न-भिन्न आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तनों की पूरी शृंखला देखी है जिसमें अन्य बातों के साथ मनी-आर्डर निर्भर अर्थव्यवस्था भी है।

खाड़ी प्रवास की परिक्रामी प्रकृति ने केरल में उल्लेखनीय रूप से वर्ग संरचना, सामाजिक पदानुक्रम, उपासना पद्धति, परिवार की संरचना तथा इन सबसे ऊपर धर्म तथा धार्मिकता को प्रभावित किया है। यद्यपि पूर्व के कई अध्ययनों में केरल में प्रवास तथा प्रेषण के आर्थिक परिणामों का अध्ययन किया गया है परंतु अभी तक इस बारे में कोई अन्वेषण करने का प्रयास नहीं किया गया कि किस प्रकार प्रवासी संचलन तथा प्रेषण ने केरल के धर्म और धार्मिक प्रथाओं को प्रभावित किया है जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक परिवर्तन आया है। अनेक उत्तर-साम्राज्यवादी परा-सामंतवादी समाजों के अनुरूप ही धर्म ने केरल में खाड़ी के नव-धनाढ्य प्रवासियों के लिए समाज व्यवस्था में उनकी वैधता एवं स्थिति स्थापित करने तथा पहले के उच्च वर्ग में पुन: प्रवेश के लिए माध्यम के रूप में एक स्पष्ट मार्ग प्रशस्त किया है। इससे एक ओर तो समूचे केरल में चर्चों/ मस्जिदों/ मंदिरों तथा धार्मिक प्रतिष्ठानों में, जो कि अधिकांशत: प्रवासियों तथा खाड़ी आधारित संगठनों द्वारा वित्तपोषित हैं, अधिकाधिक निवेश में योगदान दिया है और दूसरी ओर नई तथा आडंबरपूर्ण धार्मिक प्रथाओं, सिद्धांतों एवं धार्मिक कृत्यों का प्रचलन हुआ है। [i]

महत्वपूर्ण प्रश्न, जिसकी जाँच करने का प्रयास इस अध्ययन में हुआ है वह है : क्या मेजबान देश (खाड़ी देशों) में रहने वाले सीरियाई ईसाई अप्रवासियों का पुन:अभिमुखीकरण तथा वहाँ पर हाल ही अर्जित धन पीछे (केरल में) छूट गए ईसाइयों के जीवन और प्रथाओं में कोई प्रमुख परिवर्तन लाया है। महत्वपूर्ण प्रश्न, जिसकी यह अध्ययन जाँच करता है कि क्या केरल के ईसाइयों का प्रवास-केन्द्रित धार्मिक पुन:अभिमुखीकरण धर्म को वस्तु बनाने, सांप्रदायिक पहचान पर दावा स्थापित करना, अतिवादी धार्मिक समूहों का प्रसरण, 'संपन्नता ईसोपदेश'/टेली-ईवेंजेलिस्ट का उदय तथा ईसाई समुदाय में उपासना के नए रूपों के उभारने को उकसा रहा है।

यह कुवैत तथा केरल - में किए गए फील्डरिसर्च पर आधारित एक अनुभवसिद्ध अध्ययन है। फील्ड रिसर्च दिसंबर 2009 से जनवरी 2010 तक कुवैत में भारतीय बस्ती अबासिया में तथा जून 2015 में केरल के जिले पथनीमथीट्टा में किए गए। पथनीमथीट्टा जिला केरल के संपन्न 'खाड़ी पॉकेट' में से एक है जिसमें सीरियाई ईसाइयों की काफी बड़ी जनसंख्या है और 1900 में मलय तथा सिंगापुर को प्रवास करने वाली पहली खेप पथनीमथीट्टा के बाहरी इलाकों से ही थी। प्रलेखन की मुख्य पद्धति अप्रवासियों के विस्तृत साक्षात्कारों तथा विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों तथा त्योहारों के प्रेक्षण के माध्यम से है।

फील्डवर्क के दौरान, विस्तृत साक्षात्कार सूची की सहायता से कुवैत में लगभग 70 अप्रवासियों, जिनमें पेशेवर, भारतीय पत्रकार, सामुदायिक नेता, पादरी तथा कुवैत विश्वविद्यालय के शिक्षाविद शामिल हैं, के गहन साक्षात्कार लिए गए। इसके अलावा, पथनीमथीट्टा में लगभग 60 प्रतिवादियों के साक्षात्कार लिए गए जिसमें शिक्षाविद्, धर्मशास्त्री, बिशप, क्लर्जी, पत्रकार, स्थानीय राजनीतिज्ञ, सामुदायिक नेता आदि भी शामिल हैं। अध्ययन में एक सुविधाजनक नमूना प्रणाली का पालन किया गया जिसमें समुदाय के भीतर स्थापित संपर्कों के माध्यम से सूचनादाताओं का चयन किया गया। प्रत्येक चर्च के क्षेत्र के मुख्य व्यक्तियों ने संभावित प्रतिवादियों की पहचान करने में सहायता की।

पथनीमथीट्टा में, मैंने लगभग 70 लोगों का, विशेषकर वापिस आए उन प्रवासियों का साक्षात्कार लिया जो कि चर्चों के मामलों में बहुत सक्रिय थे। मैंने करिश्माई/ नई पीढ़ी के चर्चों के बिशप, क्लर्जी, धर्मशास्त्रियों, तथा पास्टरों के साथ गहन चर्चा की। विभिन्न चर्चों विशेषकर नव निर्मित चर्चों की सेवाओं में मेरी भागीदारी से मुझे आंतरिक उलझावों को समझने में सहायता मिली। लेखक के विभिन्न चर्च संप्रदायों के पुजारियों, केरल संघों एवं क्लबों के साथ निकट संबद्धता से उसे अच्छी तरह से शोध करने में और भी सहायता मिली। इसके अतिरिक्त, इस लेखक को विभिन्न सामाजिक समारोहों यथा शादियों, बैपटिज्म, क्रिसमस केरोल, उत्सवों, जुलूसों, अंतिम संस्कारों तथा चर्चों के अन्य समारोहों में भाग लेने का अवसर मिला जिससे उसे विषय सूची के बाहर के लोगों के साथ बातचीत करने और प्रत्युत्तर प्राप्त करने का अवसर मिला। इससे निसंदेह समुदाय की आंतरिक गतिशीलता को समझने में सहायता मिली।

इस अध्ययन में सीरियाई ईसाई संप्रदायों सीरो-मालाबार, सीरियाई ऑर्थोडोक्स, मालांकारा कैथोलिक, सीरियाई मार्थोमाइट तथा सीरियाई जैकोबियन का अध्ययन किया गया है क्योंकि ये प्रवासन में अग्रणी थे। यद्यपि इनमें लेटिन कैथोलिकों को भी शामिल किया जा सकता था परंतु उनकी सामाजिक तथा ऐतिहासिक रचना शेष गैर-कैथोलिक सीरियाई संप्रदायों से बहुत अलग है। संक्षेप में, यह अध्ययन मुख्यत: केरल में पूर्वी सीरियाई गैर-कैथोलिक संप्रदायों पर केन्द्रित है।

इस शोध-पत्र के प्रयोजन के लिए, प्रतिवादियों के नाम उनकी वास्तविक पहचान को छिपाने के लिए बदल दिए गए हैं।

प्रवास तथा केरल समाज की परिवर्तनशील गतिशीलता

1973-74 में खाड़ी देशों में तेल की कीमतों में उछाल के परिणामस्वरूप बड़े स्तर पर अवसंरचनात्मक तथा आर्थिक विकास परियोजनाएँ नियोजित तथा शुरु की गई जिसमें सुविधाओं यथा विद्यालयों, अस्पतालों, आवासों का निर्माण, परिवहन और संचार आदि में सुधार शामिल था। इन कार्यक्रमों से न केवल उच्च कुशल तकनीकी विशेषज्ञों बल्कि अर्ध-कुशल तथा अकुशल कामगारों की माँग में तेजी आई। अतएव, भारतीय प्रवासी कामगारों तथा अन्य कार्मिकों का प्रवास खाड़ी देशों की ओर रहा जहाँ कि लगभग 5.5 मिलियन प्रवासी हैं।[ii] भारतीय कामगारों की सर्वाधिक संख्या साउदी अरब में है। भारतीय कामगारों के अन्य नियोजक देश हैं - संयुक्त अरब अमीरात, ओमान, कुवैत, कतर और बहराइन। खाड़ी प्रवासी आवागमन प्रवासी हैं क्योंकि कठोर निवास तथा नागरिकता कानून तथा उनके कार्य की संविदात्मक प्रकृति उन्हें स्थायी रूप से जीसीसी देशों में बसने से रोकती है।

केरल राज्य जीसीसी देशों को सर्वाधिक संख्या में प्रवासी कामगार भेजता है। इसके अतिरिक्त, खाड़ी से किया प्रेषण केरल के वार्षिक जीडीपी का प्रमुख भाग है और 2013 में केरल को प्रेषण के तौर पर लगभग 60,000/- करोड़ रु. प्राप्त हुए थे।[iii] व्यापक स्तर पर प्रवास और प्रेषण के कारण वस्तुवादी अर्थव्यवस्था तथा दिखावे के लिए उपभोग की प्रथा केरल के समाज की अंगभूत विशेषता बन गई है। प्रेषण को दैनिक घरेलू उपभोग, उपभोक्ता वस्तुओं, निर्माण, भवन की मरम्मत, भूमि का अधिग्रहण, शिक्षा तथा धार्मिक समारोहों पर व्यय किया जाता है।[iv]

वर्ष	प्रेषण (करोड़ रु. में)
1991	3025
1992	3882
1993	6084
1994	7069
1995	9521

1996	10,761
1997	10,817
1998	13,692
1999	14,438
2000	15,732
2001	17,362
2002	18,465
2003	19,797
2004	21,251
2005	22,828
2006	24,525
2007	30,122
2008	43,288
2011	49,950
2012	60,000
2013 (जनवरी - अगस्त)	75,000

केरल की ओर अनुमानित प्रेषण प्रवाह, 1991-2013

के सी ज़कारिया इरुदयाराजन, प्रवास निगरानी अध्ययन, 2012

प्रवास तथा प्रेषण दो स्तंभ हैं जिन्होंने बहु प्रशंसित 'केरल मॉडल' को सहारा दिया है। सीडीएस सर्वेक्षण दर्शाता है कि कुल उत्प्रवासियों में से लगभग 89 प्रतिशत ने जीसीसी देशों में उत्प्रवास किया तथा लगभग 5.7 प्रतिशत यूएसए और यूरोप गए।[v] सीडीएस सर्वेक्षण ने यह भी अन्वेषण किया कि लगभग 18 प्रतिशत केरल परिवार न्यूनतम एक उत्प्रवासी को विदेश भेजते हैं और 26.5 प्रतिशत लोगों में से या तो कोई उत्प्रवासी या वापिस लौटा उत्प्रवासी था। 2008 में 16,493 करोड़ रु. हिंदू परिवारों को प्राप्त हुए, 7,800 करोड़ रु. ईसाई परिवारों को प्राप्त हुए तथा लगभग 19,000 करोड़ रु. मुस्लिम परिवारों को प्राप्त हुए।[vi] जिला-वार आँकड़ों से पता चलता है कि मुस्लिम बहुल मलप्पुरम जिला विशेषकर जीसीसी क्षेत्र को प्रवासियों का सबसे बड़ा जत्था भेजता है और प्रेषण की सबसे बड़ी राशि प्राप्त करता है।

के.सी. ज़कारिया लिखते हैं कि केरल के परिवार की पहचान अधिकाधिक उपभोक्ता वस्तुओं और उच्च उपभोग स्तर से होती है। विदेशी वस्तुओं का प्रचलन बढ़ गया है और वे समाज में मूलभूत स्तर बनाए रखने के लिए आवश्यक मानी जाती हैं।[vii] एक सामान्य तर्क है कि केरल का समाज खाड़ी प्रवास के परिणामस्वरूप उपभोक्तावाद की ओर उन्मुख हो गया है। महत्वपूर्ण बात यह है कि केरल का सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य प्रवासी प्रक्रिया और प्रेषण से अत्यधिक प्रभावित है।

सीडीएस के आँकड़े बताते हैं कि प्रेषण की एक बड़ी राशि उत्प्रवासियों के परिवारों द्वारा केरल में भूमि खरीदने और शाही/ सुंदर मकान बनाने में काम आती है। 1980 के दशक से प्रेषण और प्रवास का केरल की सामाजिक-सांस्कृतिक और राजनैतिक गतिशीलता पर भारी प्रभाव पड़ा है। 'नव-धनाढ्यता' की विभिन्न छवियों वाली एक उपभोक्तावादी संस्कृति का केरल के समाज पर विशेषकर खाड़ी प्रवासी बहुल क्षेत्रों या 'गल्फ पॉकेट' पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

चूँकि खाड़ी प्रवास की प्रकृति अनित्य तथा परिक्रामी है, इसलिए धार्मिक स्थानों सहित समाज के सभी क्षेत्रों में दृढ़ता से इसका प्रभाव प्रतिबिंबित होता है। प्रवास का सर्वाधिक पारदर्शी प्रभाव धर्म के क्षेत्र में पड़ा है तथा सामाजिक प्रेषणों के माध्यम से केरल में नव धार्मिक बाजार उभर रहा है। यद्यपि केरल के समाज पर आर्थिक परिणामों के संबंध में बहुत से शोध किए गए हैं परंतु प्रवास प्रक्रिया से संबद्ध सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों, विशेषकर धार्मिक क्षेत्र में इसका प्रभाव अधिकांशत: अछूता ही रहा है।

अवधारणात्मक रूपरेखा

समसामयिक प्रवास की पहचान अनेक नेटवर्कों के माध्यम से मेजबान और घरेलू विन्यास के मध्य बातचीत की गति बढ़ाने से होती है। मार्गोलिस का तर्क है कि, "अप्रवासी अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं से परे पारिवारिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक बंधन स्थापित करते हैं और उन्हें बनाकर रखते हैं जिससे घरेलू तथा मेजबान समाज सामाजिक कार्यों का एक अकेला कार्यक्षेत्र बनता है।[viii]" अंतर्राष्ट्रीय प्रवास के वर्तमान चरण ने ऐसी परा-राष्ट्रीय गतिविधियों की प्रचुरता को गति प्रदान की है। वे इस रूप में परा-राष्ट्रीय हैं कि वे ऐसी गतिविधियों के बारे में बताते हैं कि जो कि कतिपय समुदायों के सामाजिक उलझावों तथा विशिष्टताओं के भीतर अस्तित्व में आई फिर भी बाहर की दुनिया में उत्तरोत्तर पहचानी गई और उपयुक्त पाई गई।[ix] प्रौद्योगिकीय प्रगति से प्रवासियों का अपने मूल देश के साथ संपर्क दिनोंदिन और भी सुदृढ़ होता गया। प्रवासियों ने परा-राष्ट्रीय धार्मिक प्रथाओं के माध्यम से भी भेजने वाले देशों के साथ अपने संबंध बनाए रखने का प्रयास किया।[x]

धार्मिक समुदाय परा-राष्ट्रीय गतिविधियों के अनुरूप कार्य करते हैं जो कि उस तरीके को चुनौती देते हैं जिस तरीके से हम पारंपरिक रूप से धर्म और राजनीति की कल्पना करते हैं। प्रवासी आमतौर पर अपने मूल देश के विभिन्न प्रकार के सामाजिक और आर्थिक संपर्कों के माध्यम से धार्मिक विश्वासों और परंपराओं को बनाए रखते हैं।[xi] यद्यपि समाज वैज्ञानिकों ने प्रवासियों में धर्म की भूमिका पर व्यापक रूप से लिखा है किंतु भेजने वाले देशों में परा-राष्ट्रीय धार्मिक समूहों के प्रभाव पर बहुत कम शोध किया गया है। रुडोल्फ व पिस्काटोरी द्वारा *ट्रांसनेशनल माइग्रेशन एंड फेडिंग स्टेट्स* (1997) में निष्कर्ष दिया गया है कि आज के उत्तर आधुनिक युग में धार्मिक संस्थाएँ परा-राष्ट्रीय नागरिक समाज के सृजन में महत्वपूर्ण एजेंट बन गई हैं[xii]। अपने विन्यास में विद्वेष और भेदभाव से बचने और सामाजिक मान्यता अर्जित करने के लिए अप्रवासियों का झुकाव धार्मिक संस्थाओं की ओर होता है। हर्षमैन तर्क देते हैं कि अप्रवासियों को, जो कि अपनी मूल भूमि तथा कई रिश्तेदारों से अलग हुए हैं, धार्मिक सदस्यता इस रूप

में पनाह देती है कि इससे समायोजन के नुकसान और तनाव के बावजूद जुड़ाव एवं भागीदारी की भावना पैदा होती है।[xiii] एबाग़ ने नोट किया कि धार्मिक लामबंदी से अप्रवासियों को अपने जैसे लोगों द्वारा अनुभव की जा रही निम्नोनमुखी गतिशीलता की प्रतिपूर्ति करने के लिए उन्हें छात्रवृतियाँ, समाज सेवाएँ तथा नेतृत्व स्थितियाँ प्रदान करके प्रभावहीनता का सामना करने में सहायता मिलती है।[xiv]

वर्टोवेक तर्क देते हैं कि नए धार्मिक कृत्य और धार्मिक प्रथाएँ अप्रवासियों के अपनी भूमि से संबंधों को सुदृढ़ करते हैं।[xv] साथ ही, नव धनाढ्य प्रवासी अपनी सामाजिक पूंजी को प्रतिष्ठा और स्तर में परिवर्तित करने के लिए धार्मिक मार्ग पर भारी रूप से विश्वास करते हैं।[xvi] सीरियाई ईसाई अप्रवासियों के मामले में परा-राष्ट्रीय धार्मिक संस्थाएँ भेजने वाले और प्राप्त करने वाले देशों में संपर्क स्थापित करने के लिए एक संभव नेटवर्क के रूप में कार्य कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त, जीसीसी क्षेत्र की अनूठी सामाजिक स्थिति ने उनकी धार्मिक और धार्मिक कृत्यों संबंधी प्रथाओं को पुन:आकार प्रदान किया है और समुदाय/ संप्रदाय केन्द्रित पहचान को फिर से बदल दिया है।

मेजबान विन्यास में परा-राष्ट्रीय धार्मिक प्रथाएँ अप्रवासियों की पहचान, अवधारणा तथा धार्मिक कृत्यों संबंधी प्रथाओं को परिवर्तित कर रही हैं और उन्हें पुन: आकार प्रदान कर रही हैं। अप्रवासियों की गैर-स्वीकृति और उन्हें अलग-थलग किए जाने के कारण आध्यात्मिक और धार्मिक पहचान के लिए उनकी तृष्णा सुदृढ़ बना दी है। इन समाजों से अलग-थलग कर दिए गए अप्रवासियों द्वारा अनुभव की जाने वाली पहचान शून्यता को भरने के लिए "सामुदायिक केन्द्र" के तौर पर नए उपासना स्थल उभर कर आए हैं।

मेजबान विन्यास में रहने वाले अप्रवासियों के पुन:अभिमुखीकरण ने भेजने वाले समाज पर भी सीधा प्रभाव डाला है। भारतीयों का खाड़ी देशों में प्रवास अनित्य और वृत्तात्मक दोनों प्रकार की प्रकृति का है जिससे अप्रवासियों की परा-राष्ट्रीय गतिविधियाँ तथा उन्हें भेजने वाले देशों के साथ उनका संबंध ऊँचा उठा है। धार्मिक नवीनीकरण तथा प्रवासियों को अलग-थलग किए जाने से समाज (केरल) का सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्र असावधानीवश प्रभावित हुआ है। भेद-भाव संबंधी इन अनुभवों ने उन्हें केरल के अपने राज्य में परा-राष्ट्रीय वातावरण में, परंतु आत्मा से अनन्यतम, अपने धर्मों को पुन: गढ़ने के लिए प्रेरित किया। केटी गार्डनर (1995) ने अपने शोध में इस बात पर बल दिया कि बांग्लादेश में लौट कर आने वाले मुस्लिम प्रवासी इस्लाम के अधिक पुरातनपंथी, असहनशील रूप में लिप्त थे जो कि पुरानी व्यवस्था के संतों और तीर्थस्थलों को चुनौती देता था।[xvii] केरल में, खाड़ी से लौटने वाले धार्मिक गतिविधियों के संरक्षक बनने के लिए बारंबार बहुत अधिक मात्रा में धन खर्च करते हैं - यह धन को राजनैतिक शक्ति तथा सामाजिक स्तर में परिवर्तित करने का सांस्कृतिक रूप से अनुमोदित तरीका है (ऑसेला, 2003)[xviii]। एबाग़ व यांग (2001) ने बहुत सारी ऐसी अप्रवासी धार्मिक सभाएँ देखी जो कि इंटरनेट के माध्यम से भेजने वाले देश दैनिक रूप से संपर्क करती थी।[xix] लेविट तर्क देते हैं कि धार्मिक संस्थाएँ जैसे कि प्रोटेस्टेंट समूह स्थानीय परा-राष्ट्रीय संपर्कों को पुन: प्रवर्तित करती हैं तथा मूल देश में धार्मिक विश्वासों पर आधारित नागरिक और राजनैतिक संलिप्तता को भी प्रोत्साहित करती हैं। मूल देश

के साथ विभिन्न प्रकार के सामाजिक और आर्थिक संपकों के माध्यम से प्रवासी अक्सर अपने धार्मिक विश्वासों को बनाए रखते हैं।[xx]

समसामयिक अध्ययनों में भेजने वाले देशों में प्रेषण के आर्थिक परिणामों और प्रभावों की मुख्य रूप से जाँच की गई है किंतु 'सामाजिक प्रेषणों' के गहरे प्रभावों पर ध्यान नहीं दिया गया। सामाजिक प्रेषण हैं विचार, प्रथाएँ, पहचान तथा सामाजिक पूंजी, जिनका प्रवाह मेजबान देश से प्राप्तकर्ता देश की ओर होता है।[xxi] मेजबान समाज में प्रवासियों के जीवन में सामाजिक-सांस्कृतिक-वैचारिक पुन:अभिमुखीकरण पहचानयोग्य मार्गों के माध्यम से सीधा प्रेषित होता है और उनका स्रोत और गंतव्य बिल्कुल स्पष्ट होता है। मजेदार बात यह है कि 'सामाजिक प्रेषणों' को उद्दीप्त करने वाली सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तनशील चीज है परा-राष्ट्रीय धार्मिक नेटवर्क।

अत: इस अध्ययन में तर्क दिया गया है कि धर्म सहित बहुआयामी परा-राष्ट्रीय नेटवर्क के माध्यम से मेजबान विन्यास का सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से भेजने वाले समाज पर पड़ता है। परा-राष्ट्रीय धार्मिक नेटवर्क भेजने वाले समाज में सामाजिक क्षेत्र के पुन: अभिमुखीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। अप्रवासियों के जीवन में परिवर्तन तथा उनके विश्वासों के नवीनीकरण का मूल समाज के धार्मिक क्षेत्र पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

केरल के सीरियाई ईसाई और प्रवास

सीरियाई ईसाई सहित केरल की जनसंख्या में कुल 18.6 प्रतिशत ईसाई हैं जो कि संख्या में लगभग 6 मिलियन हैं।[xxii] इनमें से सीरियाई ईसाई - जो कि विश्व में ईसाइयों का सबसे पुराना संप्रदाय है, लगभग 3 मिलियन है।[xxiii] केरल में सीरियाई ईसाई का अर्थ है वह जो कि सीरियाई ईसाई माता-पिता की संतान हो और सीरियाई धार्मिक कृत्यों का पालन करता हो।[xxiv] सीरियाई ईसाइयों में विभिन्न संप्रदाय शामिल हैं यथा - सीरो-मालाबार, मालांकारा कैथोलिक, जैकोबियन, ऑर्थोडोक्स सीरियाई चर्च, मार्थोमाइट, काल्धाई, कैनानाई तथा प्रोटेस्टेंट सीरियाई। पूर्व में यह संप्रदाय केरल के 5 या 6 जिलों में संकेद्रित था। किंतु, उच्च शिक्षा दर, व्यावसायिक विविधीकरण, समुदाय में रोजगार के कम अवसरों के कारण सीरियाई ईसाइयों ने भारत के अन्य राज्यों और विदेश की ओर प्रवास किया।

सीरियाई ईसाइयों के प्रवास का इतिहास बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से शुरु होता है जब दक्षिण पूर्व एशिया - विशेषकर सिंगापुर और मलयेशिया - की तरफ प्रवाह हुआ। 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में केन्द्रीय त्रावणकोर से सीरियाई ईसाइयों तथा एझावा समुदाय में से शिक्षित एवं समर्थ वर्ग ने ब्रिटिश सरकार के स्वामित्व वाले बागानों में अध्यापकों और कुशल श्रमिक के तौर पर श्रीलंका, बर्मा और दक्षिणपूर्व एशिया की ओर प्रवास किया।

दक्षिण पूर्व क्षेत्र, जो कि औपनिवेशिक काल से उत्प्रवास का एक पारंपरिक क्षेत्र रहा है, में प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण इस क्षेत्र में प्रवास सदा अस्थायी रहा है। बाद में, 1960 में, केरल के सीरियाई चर्चों की इथियोपियाई ऑर्थोडॉक्स चर्चों के साथ निकटता से सीरियाई ईसाइयों के लिए अध्यापक, परा-चिकित्सीय तथा कुशल श्रमिक के तौर पर इथियोपिया तथा अफ्रीकी देशों में प्रवास के नए आयाम खुले। तत्पश्चात, संयुक्त राज्य अमेरिका में अप्रवास कानूनों में ढील के कारण सीरियाई संप्रदायों से परा-चिकित्सा तथा पेशेवर लोगों ने उत्तरी अमेरिका और कनाडा की ओर भी उत्प्रवास किया।

अंतत: 1970 में फारस की खाड़ी में तेल के समेकन के साथ सीरियाई ईसाइयों ने पश्चिम एशिया में नए अवसरों की खोज के लिए अपने केरलवासियों का साथ अपनाया। कुवैत पहला अरब खाड़ी देश था जिसने केरल के स्वदेशी ईसाई समुदाय के लिए अपने द्वार खोले।

1940 के दशक के अंत में, मार्थोमा सीरियाई चर्च के सदस्यों का एक छोटा सा समूह उस क्षेत्र में उपासना सेवा स्थापित करने वाला सर्वप्रथम समूह बना। 1970 में तेल में अचानक तेजी से जीसीसी देशों में सीरियाई ईसाइयों के अप्रवास को और तेजी मिली जिससे साउदी अरब को छोड़कर सभी खाड़ी देशों में सीरियाई चर्चों की स्थापना हुई।

इस प्रवास ने 2003 में सीरियाई ईसाई समुदाय के सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य को स्पष्ट रूप से परिवर्तित कर दिया तथा गैर-कैथोलिक सीरियाइयों को विदेश से प्रेषण के तौर पर लगभग 3000 करोड़ रु. प्राप्त हुए।[xxv] केरल में जनसंख्या के अनुपात में ईसाई दूसरे पायदान पर हैं जिन्होंने विदेशों में उत्प्रवास किया तथा मार्थोमा सीरियाई समुदाय ने सर्वाधिक संख्या में अंतर्राष्ट्रीय उत्प्रवास किया।[xxvi] 2003 में केरल को भेजे जाने वाले कुल प्रेषण में रोमन कैथोलिक परिवारों को 9.4 प्रतिशत, मार्थोमा सीरियाई समुदाय को 5.4 प्रतिशत, ऑर्थोडॉक्स/ जैकोबियन सीरियाइयों को 7.0 प्रतिशत तथा चर्च ऑफ साउथ इंडिया व प्रोटेस्टेंट को 2.0 प्रतिशत प्राप्त हुए। मजेदार बात यह है कि 2004 में लगभग 31 प्रतिशत सीरियाई मार्थोमा परिवारों को प्रेषण के तौर पर न्यूनतम 22,000 रु. प्राप्त हुए।[xxvii] इसके अलावा संयुक्त राज्य में प्रवास करने वाले लोगों में, अन्य समुदायों की तुलना में ईसाइयों का हिस्सा कहीं अधिक है। 2008 में, ईसाई परिवारों को प्रेषण के तौर पर लगभग 7800 करोड़ रु. प्राप्त हुए।[xxviii]

मजेदार बात यह है कि अधिकतम प्रेषण खाड़ी देशों से प्राप्त हुआ। 1960 के दशक अंत से ही, खाड़ी देशों से किया गया प्रेषण ही केरल के सीरियाई चर्चों के लिए आय का प्रमुख स्रोत रहा है। यह जानना महत्वपूर्ण है कि सभी सीरियाई चर्चों के पृथक खाड़ी डायोसीज़/ डायोसीज़न बिशप रहे हैं और प्रवासी डायोसीज़ में कार्य करना क्लर्जियों में एक बहुत प्रतिष्ठित कार्य माना जाता है। मार्थोमा सीरियाई समुदाय अन्य समुदायों की तुलना में साक्षरता, शिक्षा, प्रवास दर, स्वास्थ्य व्यय, भूमि तथा मकान के स्वामित्व, प्रेषण आदि की दृष्टि से अधिक ऊपर है। सीरियाई ईसाइयों की अत्यधिक संपन्नता तथा सामाजिक-आर्थिक विकास का बहुत बड़ा कारण विशेषकर खाड़ी क्षेत्र में अंतर्राष्ट्रीय प्रवास से प्रेषण का अननुमानित प्रवाह है।

मेजबान विन्यास में केरल अप्रवासियों के मध्य धर्म के प्रति दृढ़ता

वर्तमान में जीसीसी देशों में लगभग 60 मलयालम चर्च हैं जिनमें विभिन्न नव-पेंटेकोस्टल तथा करिश्माई समूहों के साथ-साथ सीरियाई ईसाई तथा कैथोलिक संप्रदाय - दोनों शामिल हैं। 1990 के दशक तक, चर्च द्वारा अप्रवासियों से समर्थन मांगने का प्रयास एक दैनिक तथा कम महत्वपूर्ण कार्य था। हालाँकि, पिछले एक दशक में भारतीय अप्रवासियों में, विशेषकर सीरियाई ईसाई समुदाय में धर्म की भूमिका नाटकीय रूप से बढ़ गई है।

कुवैत में ईसाइयों का इतिहास 1900 के दशक के प्रारंभ से शुरु होता है जब अमेरिकन रिफॉर्म्ड चर्च ऑफ अमेरिका से मिशनरी रेवरेंड डॉ. सेम्युअल ज्वेमर तथा रेवरेंड फ्रेड बार्ने 1900 में कुवैत आए। इसके पश्चात्, 1911 में कुवैती अमीर शेख मुबारक अलसबाह ने अमेरिकन रिफॉर्म्ड चर्च को डॉ. स्कूडर के नेतृत्व में एक अस्पताल बनाने की अनुमति दे दी जो अंतत: 1913 में स्थापित हुआ।[xxix] गल्फ ऑयल और ब्रिटिश पेट्रोलियम के मध्य साझीदारी से 1934 में कुवैत ऑयल कंपनी (केओसी) की स्थापना हुई। चूँकि अधिकांश कर्मचारी ईसाई थे इसलिए केओसी ने 1940 के दशक के अंत में अहमदी में दो चर्च बनाए और अभी तक इन दोनों चर्चों का रखरखाव कुवैत ऑयल कंपनी द्वारा किया जाता है। अमेरिकी अस्पताल चैपल को 1960 के दशक के मध्य में एक चर्च में परिवर्तित कर दिया गया। वर्तमान में, अमेरिकन मेडिकल मिशन परिसर में एनईसीके अवस्थित है।

कुवैत की लघु अरब धर्मसभा में ज्यादातर कुवैती ईसाई शामिल हैं और कुवैती ईसाइयों के लगभग 200 परिवार हैं। पहला ईसाई परिवार 1920 के दशक की शुरुआत में दक्षिणपूर्व तुर्की और इराक से आया और वे कुवैत में 90 वर्षों से अधिक से रह रहे हैं। ये कुवैती ईसाई प्रेसबाइटेरियन धर्मसभा से संबंध रखते हैं और रेवरेंड इम्मेन्युअल ग़रीब इनके कुवैत में अकेले मूल पास्टर हैं। [xxx]

कुवैत को ब्रिटेन से 1961 में स्वतंत्रता मिली और सत्ताधारी अल सबह परिवार तभी से सत्ता में है। 1970 तथा 1980 के दशक में कुवैती सत्ताधारी वर्ग ने यूएसएसआर और यूएसए के बीच तटस्थता बनाए रखी। हालाँकि 1980 के दशक के अंत में, कुवैत भौगोलिक-राजनैतिक रणनीति की दृष्टि से पूरी तरह से संयुक्त राज्य की ओर झुक गया। ईरान-ईराक युद्ध संयुक्त राज्य के साथ गठबंधन मजबूत करने के लिए निर्णायक कारक था। 1990 में कुवैत पर ईराकी हमले और तत्पश्चात यूएस के हस्तक्षेप से कुवैत-यूएस संबंध बहुत हद तक मजबूत हुए हैं।

1990 के दशक के पश्चात से कुवैत की स्वतंत्रता के बाद, संभवत: देश में अमरीकियों की उपस्थिति के कारण चर्च की गतिविधियों में तेजी आई। उदाहरण के तौर पर संयुक्त राज्य डिपार्टमेंट ऑफ स्टेट्स की धार्मिक स्वतंत्रता पर रिपोर्ट (2010) में बताया गया है कि संयुक्त राज्य सरकार मानवाधिकार को बढ़ावा

देने के लिए अपनी समग्र नीति के एक भाग के रूप में सरकार के साथ धार्मिक स्वतंत्रता पर चर्चा करती है। धार्मिक स्वतंत्रता के मामलों की गहन निगरानी दूतावास की प्राथमिकता रही है। रिपोर्ट की अवधि के दौरान, दूतावास के कर्मचारी प्रमुख मान्यता प्राप्त ईसाई संप्रदायों के प्रतिनिधियों से मिलते हैं, उन्हें सरकार को अपनी चिंताएँ एकीकृत रूप से प्रस्तुत करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और सरकारी अधिकारियों के साथ उच्च स्तरीय बैठकों में उनकी ओर से मामले को उठाते हैं।[xxxi]

कुवैत में अमरीकी हस्तक्षेप से अरब ईसाई अल्पसंख्यकों की सामाजिक गतिशीलता में परिवर्तन आया है तथा कुवैत में गैर इस्लामिक क्षेत्र में भी विस्तार हुआ है। उदाहरण के तौर पर जनवरी 1999 में कुवैत में अरब धर्म सभा ने रेवरेंड इम्मेन्यूअल बेंजामिन ग़रीब को एनईसीके के क्लर्जी के रूप में नियुक्त किया। यद्यपि उन्होंने 1989 में प्रेसबाइटेरियन थियोलोजिकल सेमिनरीज़ से स्नातक किया, उन्हें 1999 में पादरी नियुक्त किया गया था और वह अमेरिकन एपिस्कोपल चर्च के समर्थन से नियुक्त होने वाले पहले कुवैती ईसाई थे।[xxxii] दूसरे, दिसंबर 1999 में बाइबिल सोसाइटी ने अपने वितरण कार्यालय - द बुक हाउस कंपनी लिमिटेड की स्थापना की। मजेदार बात यह है कि कुवैत वह पहला देश था जिसने जीसीसी देशों में बाइबिल सोसाइटी की स्थापना की अनुमति दी। वर्तमान में एनईसीके का कुवैत सरकार के साथ बुक हाउस कंपनी लिमिटेड के माध्यम से पुस्तकों का आयात करने और उन्हें ईसाइयों को भेंट करने का समझौता है। अंत में, यह बात जानने योग्य है कि वेटिकन देश के साथ राजनयिक संबंध बनाने वाला कुवैत खाड़ी सहयोग परिषद का पहला सदस्य है। किंतु 2001 में इस क्षेत्र में वेटिकन की रुचि का प्रतिनिधित्व करने के लिए एपोस्टोलिक ननसियेचर का चार्ज डी'अफेयर्स से उन्नयन करके उसे पूर्ण राजदूतीय स्तर प्रदान किया गया है।

वर्तमान में, अमेरिकन रिवाइवल चर्च या लाइटहाउस चर्च एक सुस्थापित धर्म-सभा है जिसके पाँच से अधिक अमेरिकी पास्टर हैं। लाइट हाउस चर्च की वेबसाइट में प्रवासियों के लिए अमेरिकन मिशनरियों की विभिन्न आध्यात्मिक गतिविधियों को दिखाया गया है। यह जानना मजेदार होगा कि लाहट हाउस चर्च का वरिष्ठ पादरी 1985 से कुवैत में रहता है और अब चर्च का एक आधिकारिक बाइबिल कॉलेज और एक अमेरिकी स्कूल है।

2009 में क्रिसमस के दौरान, मैंने अप्रवासियों को गलियों में तारे जैसे धार्मिक प्रतीकों का प्रदर्शन करते, पटाखे जलाते तथा ऊँची आवाज में केरोल गाते हुए देखा। मुझे कुछ बूढ़े प्रतिवादियों ने बताया कि ईसाई प्रतीकों का खुलकर सार्वजनिक प्रदर्शन हाल ही में कुवैत की मुक्ति के पश्चात शुरु हुआ है। ईसाई धर्म को सार्वजनिक रूप से मनाने के संबंध में सरकार का गैर-हस्तक्षेप कुवैती सरकार की अमेरिकियों पर रणनीतिक रूप से निर्भर होने की वजह से हो सकता है।

हालाँकि ईसाइयत के अत्यधिक विस्तार की इस्लामवादियों ने तीखी आलोचना की है। उदाहरण के तौर पर, फरवरी 2012 में कुवैती संसद के कुछ सदस्यों ने कुवैत में नए चर्चों के निर्माण पर रोक लगाने के संबंध में खुलकर मांग की। कुवैती संसद सदस्य ओसामा अल-मुनव्वर ने ट्विटर पर घोषणा की कि वह

देश में से सभी चर्चों को हटाने की मांग के लिए एक प्रारूप कानून प्रस्तुत करने की योजना बना रहे हैं।[xxxiii] इसके पश्चात साउदी अरब के ग्रांड मुफ्ती ने कुवैत सहित जीसीसी देशों में सभी चर्चों के विध्वंस की मांग की। चर्चों के दावों तथा देश में ईसाइयत की घुसपैठ पर कुवैती जनसंख्या के कुछ वर्गों में अप्रसन्नता बढ़ती जा रही है।[xxxiv]

खाड़ी जाने वाले केरल के प्रवासियों के मध्य अपने फील्ड रिसर्च के दौरान मैंने देखा कि प्रवासियों के दैनिक जीवन में धर्म महत्वपूर्ण कारक है क्योंकि यह प्रवासियों द्वारा विदेशों में अनुभव किए जाने वाले अत्यधिक सामाजिक एकाकीपन के परिप्रेक्ष्य में पैदा हुए भावनात्मक अभाव को भरता है। कुवैत में केरल के ईसाई अप्रवासी ने यह पाया कि केरल के प्रवासियों के मध्य पिछले एक दशक के दौरान आध्यात्मिकता और धर्म की भूमिका अत्यधिक रूप से बढ़ गई है।

1990 के दशक तक कुवैत में केरल तथा जीसीसी में प्रवासियों की धार्मिक गतिविधियाँ एक रोजमर्रा तथा गैर-महत्वपूर्ण कार्य से अधिक नहीं थी। अतिवादी धार्मिक समूहों यथा नव-पेंटेकोस्टल तथा ईवेंजेलिकल ईसाई संप्रदाय, कठोर वहाबी परंपराओं वाले मुस्लिम समूहों यथा जमात-ए-इस्लामी तथा हिंदू रूढ़िवादी समूह यथा आरएसएस तथा विभिन्न संप्रदायों यथा माता अमृतानंदमयी ने जीसीसी देशों विशेषकर कुवैत में अप्रवासियों के जीवन में गहरे पैठ बना ली है। ये धार्मिक समूह अपनी प्रकृति में परा-राष्ट्रीय समूह हैं और वे घरेलू तथा गंतव्य देशों से सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं। इसके अलावा, स्थानीय निवासियों से सामाजिक संपर्क की कमी तथा जीसीसी देशों में अप्रवासियों द्वारा महसूस किए जाने वाला सामाजिक एकाकीपन ने उनकी आध्यात्मिक और धार्मिक पहचान की तृष्णा को सुदृढ़ ही किया है।

1990 के दशक की शुरुआत में प्रवासियों विशेषकर ईसाइयों में हुआ प्रमुख विकास नव-पेंटेकोस्टल तथा अन्य धार्मिक समूहों का उदय होना था। अधिक गहराई में जाने पर देखा जा सकता है कि मुद्दों के बहुत से पहलू हैं जो कि धार्मिक संगठनों के दावों को प्रवासी कामगारों के जीवन में ले गए। दो प्रमुख खाड़ी युद्ध तथा परवर्ती आतंकवाद से युद्ध ने एक नए राजनैतिक-धार्मिक परिप्रेक्ष्य के उभार में योगदान दिया जिससे स्थिति और अधिक गंभीर हो गई। क्षेत्र का राजनैतिक अस्थायित्व तथा आर्थिक मंदी, प्रतिकूल सामाजिक वातावरण तथा मेजबान समाज से निरंतर सामुदायिक परकीयकरण ने घटना को ऊर्जा प्रदान की। उदाहरण के तौर पर कुवैत में, 1990 में ईराक के हमले तथा इसके पश्चात कुवैत से अप्रवासियों को निकाले जाने से प्रवासियों के मन में एक असुरक्षा की भावना तथा अंतर्मन में डर बैठ गया। करिश्माई पादरियों वाले प्रार्थना समूहों का विस्तार, मिशनरी गतिविधियों को भारी दान की प्रचलन, ईश्वरीय व्यक्तियों/ साधुओं/ पास्टरों/ क्लर्जी पर बढ़ती निर्भरता, तथा भारत एवं विदेशों में पवित्र तीर्थस्थलों की तीर्थ यात्रा की उभरती प्रवत्ति से अप्रवासियों के जीवन में धर्म की उल्लासपूर्ण उपस्थिति प्रदर्शित होती है।

अप्रवासियों के मध्य आस्था के पुन: मजबूत होने के कुछ निजी कारण भी हैं। एक निर्माण कामगार के जीवन में सीमित संविदा अवधि में वांछित धन कमाने का तनाव या रहने की अवधि के बढ़ने के अंदेशे

से यह आस्था और गहरी हुई है। मजेदार बात यह है कि परा-राष्ट्रीय धार्मिक समूहों की प्रमुख गतिविधियाँ मुख्यत: मजदूर कैंपों में हैं जिनकी मुख्यधारा के मेजबान समाज द्वारा कई वर्षों से अनदेखी की जा रही थी, अतएव कामगार वर्ग से बहुत बड़ी संख्या में शिष्य मिले। भौगोलिक-राजनैतिक मंथन, सामाजिक-राजनैतिक अकेलापन तथा अप्रवासियों को मेजबान समाज की सामाजिक संरचना से अलग रखने से धार्मिक क्षेत्र को और अधिक समेकित कर दिया।

अप्रवासियों के लिए धन का संचय एक अन्य प्रमुख चिंता रही और इस प्रक्रिया के लिए संघर्ष करने से उद्विग्नता, तनाव, प्रतिस्पर्धा और असुरक्षा बढ़ी। इसके परिणामस्वरूप कुवैत में 'आधिकारिक धर्म' की तुलना में 'लोकप्रिय धर्म' जैसे नव-पेंटेकोस्टल को फायदा हुआ क्योंकि लोकप्रिय धर्म संपन्नता के ईसोपदेश पर बल देते थे। इस परिवर्तनशील स्थिति का इसने ने दोहन किया और बड़ी संख्या में अप्रवासी विशेषकर युवा इस नए धार्मिक आंदोलन इसकी तरफ बढ़े।

कुवैत में, वर्तमान में, धर्म प्रवासियों के दैनिक जीवन का प्रमुख कारक है क्योंकि यह भारतीय प्रवासियों द्वारा विदेश में महसूस किए जाने वाले अत्यधिक सामाजिक एकाकीपन के परिप्रेक्ष्य में पैदा हुए भावनात्मक शून्य को भरता है। प्रवासी धार्मिक प्रथाएँ घरेलू और मेजबान विन्यास के मध्य परा-राष्ट्रीय संपर्कों के निर्वाह में प्रमुख भूमिका अदा करती है तथा ये भेजने वाले देश में अपनेपन की एक वैकल्पिक भावना का सृजन करती है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, धर्म अप्रवासियों को समुदाय निर्माण के अवसर प्रदान करता है तथा 'प्रमुख धारा' व 'लोकप्रिय/ रूढ़वादी' धार्मिक समूहों में गहन संघर्ष पैदा करता है तथा एक अनूठी 'सांप्रदायिक/ पुनर्जीवन पहचान' गढ़ने में सहायता भी करता है। इसके अतिरिक्त, मेजबान विन्यास ने 'लोकप्रिय धर्म' को उभारने का मार्ग प्रशस्त किया तथा इसने अनूठी 'वैश्विक पहचान' सृजित की जिसने राष्ट्रीय सीमाओं का अतिक्रमण किया।

खाड़ी प्रवास नेटवर्क और केरल में 'संपन्नता ईसोपदेश' की लहर

खाड़ी देशों में भारतीय प्रवास अनित्य तथा परिक्रामी प्रकृति का है जो कि अप्रवासियों की परा-राष्ट्रीय गतिविधियों को और भेजने वाले देश के साथ उनके संपर्कों को ऊँचा उठाता है। समय के साथ-साथ प्रवासियों और गैर-प्रवासियों के जीवन परा-राष्ट्रीय बन गए हैं जिसमें दोनों समाजों के विचार, प्रथाएँ, आस्थाएँ और परंपराएँ शामिल हो गई हैं। धार्मिक विश्वास और प्रथाएँ सामाजिक प्रेषणों के लिए महत्वपूर्ण घटक के तौर पर कार्य भी कर सकती हैं। बड़ा प्रश्न, जिस पर यहाँ विचार करने की आवश्यकता है यह है कि क्या मेजबान देश (खाड़ी देश) में प्रवासियों के जीवन का पुन: अभिमुखीकरण तथा नव सृजित धन केरल के धार्मिक क्षेत्र में नाटकीय परिवर्तन लाया है।

केरल के समाज की जीवन-शैली, उपभोक्ता पद्धति, आध्यात्मिक और उपासना की रीति, स्थापत्य कला तथा दृष्टिकोण पर मेजबान विन्यास में गतिशीलता का सीधा प्रभाव पड़ा है। खाड़ी प्रवास की अनित्य और परिक्रामी प्रकृति ने प्रवासियों के घरेलू समाज के साथ संपर्क को सुदृढ़ किया है और उससे घरेलू

समाज तथा धार्मिक संस्थाओं की प्रथाओं और प्रकृति में जबर्दस्त बदलाव आया है। निसंदेह सीरियाई ईसाइयों का धार्मिक क्षेत्र एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ प्रवास प्रक्रिया के माध्यम से गहरा प्रभाव पड़ा है। धार्मिकता और धार्मिक प्रथाएँ प्रवासी अनुभवों द्वारा प्रभावित होकर परिवर्तित हुई हैं जो कि मेजबान देश में उनके धार्मिक विश्वासों पर आधारित हैं। अंतर संबंधी इन वाले स्वयं के धर्म की पुन: खोज करने पर जोर दिया। इस संक्रमणकालीन प्रवास ने सीरियाई ईसाइयों के सामाजिक-सांस्कृतिक तथा आध्यात्मिक परिदृश्य को बहुत अधिक बदल दिया। जैसा कि ऊपर संकेत किया गया, सीरियाई ईसाई अप्रवासियों के आध्यात्मिक पुन:अभिमुखीकरण तथा धार्मिकता में परिवर्तन उनके घरेलू समाज में झलकता है, जिसका चर्च की पारंपरिक प्रकृति पर सीधा प्रभाव पड़ा है।

वर्तमान में 'लोकप्रिय धर्म' यथा नव-पेंटेकोस्टल चर्च ने सीरियाई ईसाइयों के मध्य अपूर्व रूप से पैठ बना ली है। इन इवेंजेलिक समूहों का केरल में सुगठित नेटवर्क है और वापिस लौटने वाले प्रवासियों की आवश्यकता को पूरा करने के लिए उनके पास बड़ी धर्म-सभाएँ हैं। करिश्माई पास्टरों वाले इवेंजेलिक प्रार्थना समूह का प्रसार, मिशनरी गतिविधियों के लिए भारी दान, 'टाइद' का लोकप्रिय होना, भारत तथा विदेशों में डायोसीज़ का प्रसार, सेमिनरीज़ और बाइबिल कॉलेजों में बढ़ोतरी सामुदायिक जीवन में धर्म की मुखर तथा जीवंत उपस्थिति प्रतिबिंबित करती है। इस परिप्रेक्ष्य में, पारंपरिक चर्च यथा सीरियाई ईसाई धर्म के इन नए भिन्न रूपों के साथ प्रतिस्पर्धा करने में कठिनाई का सामना करते हैं, अतएव, वे अपने सदस्यों का नव-पेंटेकोस्टल चर्चों की ओर पलायन करने से रोकने के लिए भरपूर संघर्ष करते हैं।

केरल में मध्य पूर्व प्राधिधर्माध्यक्षों (पेट्रियाशेट्स) के साथ दीर्घकालीन कम्यूनियन के कारण ऑर्थोडॉक्स परंपराओं और पूर्वी सीरियाई उपासना पद्धति का पालन करते रहे हैं। अधिकांश सीरियाई चर्च अत्यधिक संगठित हैं और प्रकृति में कठोर पदानुक्रम वाले और कर्मकांडी हैं और पूर्वी कलीसियाई परंपरा वाले हैं। यहाँ तक कि औपनिवेशिक काल के दौरान यूरोपीय मिशनरियों का हस्तक्षेप भी पूर्वी परंपराओं और रूढ़िवादी व्यवहारों को परिवर्तित नहीं कर पाया। परंतु नई पीढ़ी के नव-पेंटेकोस्टल चर्च प्रवासियों के समर्थन के माध्यम से सीरियाई समुदाय को नुकसान पहुचाने में काफी सीमा तक सफल रहे। पेंटेकोस्टल और नव-पेंटेकोस्टल चर्च प्रवासी विन्यास में बहुत लोकप्रिय हैं और इनके सीरियाई संप्रदायों के बहुत सारे अनुयायी हैं। इसके अतिरिक्त ढीले पदानुक्रम वाले बहुत से परा-राष्ट्रीय करिश्माई चर्च जीसीसी देशों में चल रहे हैं।

पेंटेकोस्टलवाद का उद्भव यूएसए में लॉस एंजेल्स में 20वीं शताब्दी में हुआ था और प्रारंभ में इसे 'अज़ूसा स्ट्रीट' आंदोलन के नाम से जाना जाता था। ईश्वर और राक्षस के मध्य युद्ध उनके धर्मशास्त्र का केन्द्र है और पेंटेकोस्टल आंदोलन 1940 के दशक के प्रारंभ में केरल के तट पर पहुँचा था। वे सीरियाई संप्रदायों का भेदन नहीं कर सके और केवल दक्षिणी भारत के दबे-कुचले और निम्न जाति वर्गों में कुछ पैठ बना पाए थे। दूसरी ओर, यद्यपि, नव-पेंटेकोस्टल चर्च का उद्भव पेंटेकोस्टल संप्रदाय से ही हुआ है तथापि इसका धर्म-शास्त्र मूल चर्च से बिल्कुल अलग है। नव-पेंटेकोस्टल चर्च मुख्यत: एक अमेरिकी चर्च है और भारतीय धर्म-सभा के अमेरिकी पेंटेकोस्टल आंदोलन से निकट से संबंधित हैं।

नव-पेंटेकोस्टल भी प्रधान रूप से एक अमेरिकी आंदोलन है और इसका धर्मशास्त्र 'संपन्नता ईसोपदेश' पर केन्द्रित है। नव-पेंटेकोस्टल चर्च प्रधान रूप से एक वैश्विक धर्म है और संपन्नता ईसोपदेश पर बल देता है। यह एक अनूठा सिद्धांत है जिसमें आस्था और धन - दोनों को बाईबिल की रूपरेखा तथा वैश्वीकृत बाजार से जोड़ा गया है। 'संपन्नता ईसोपदेश' एक उपभोक्तावादी धर्मशास्त्र है, जिसकी लोकप्रियता अमेरिकी ईसाइयों में हाल के वर्षों में बहुत तेजी से बढ़ी है और इसकी शिक्षा है- 'भौतिक धन ईश्वर की कृपा है'। 'संपन्नता ईसोपदेश' का लक्ष्य भौतिक संपन्नता अर्जित करना है, जिसे ईश्वर के प्रेम के साक्ष्य के तौर पर देखा जाता है। नव-पेंटेकोस्टलिज्म एक तरीके का नव-उदारवादी वाणिज्यिक धर्मशास्त्र है जो कि एक नए तरह का धार्मिक क्षेत्र, नव-उदारवादी भौतिकतावादी मूल्य और आध्यात्मिकता प्रदान करता है तथा धन के संचय और भौतिकतावादी उपभोग को बढ़ावा देता है। अन्य शब्दों में, यह 'वाणिज्यिक ईसाइयत के एक नए रूप का समर्थन करता है और 'भौतिक संपन्नता' को परिष्कृत करता है।

खाड़ी में उत्प्रवासियों का आध्यात्मिक पुन:अभिमुखीकरण तथा नव आध्यात्मिकता के लिए उनकी तृष्णा ने भेजने वाले समाज के सीरियाई ईसाइयों में महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। केरल में अपने फील्ड रिसर्च के दौरान, मैंने एक रविवार की सुबह पथनीमथीट्टा नगर में लोकप्रिय नव-पेंटेकोस्टल चर्च 'हेवनली फीस्ट' का दौरा किया था। बड़ी धर्मसभा में अधिकतर लोग मध्य वर्ग से थे और अधिकांश प्रतिभागी विभिन्न सीरियाई संप्रदायों से थे। अपनी बातचीत के दौरान मैं समझ पाया कि धर्मसभा के अधिकांश सदस्य या तो प्रवासी परिवार थे या फिर लौटकर आए प्रवासी थे। पास्टर का धर्मोपदेश बहुत रोचक था और उसने कहा *"जब आपका इंतजार एक मर्सिडीज कर रही हो तो मारुति क्यों चलाएँ? हम एक चार-बेडरूम वाले घर में क्यों रहें जबकि आपके जीवन में ईश्वर ने महल की योजना बना रखी है? ईश्वर हमें वित्तीय रूप से संपन्न बनाना चाहता है, बहुत सारा धन प्राप्त करने के लिए, किस्मत को पूरा करने के लिए उसने इंतजाम कर रखा है।"*

वर्तमान में, केरल में सीरियाई ईसाई समुदाय में नव-पेंटेकोस्टल समूह बहुत लोकप्रिय है। सीरियाई चर्चों की संहिताबद्ध उपासना-पद्धति, रंगबिरंगे सेक्रामेंट्स, अलटार, कैसोक्स तथा मोमबत्तियों के स्थान पर इलेक्ट्रिक ऑर्गन, थेयेट्रिकल प्रार्थना सत्र, कानफोड़ू भाषण, एंप्लीफाइड गिटार, ट्रंपेट, थ्रेशिंग ड्रम, तेज संगीत आ गए हैं। वर्तमान में, रविवार नाटक और तड़क-भड़क से भरे हुए हैं। आध्यात्मिक प्रार्थनाएँ, चमत्कार, बोलियों में बोलना, कानफोड़ू भाषण तथा राक्षस को पीटते धर्मोपदेशक उपासना की पद्धति बन गए हैं।

निकट से देखने पर पता चलता है कि इन करिश्माई समूहों की अचानक से लोकप्रियता के लिए अनेक मुद्दे जिम्मेदार हैं। नव-पेंटेकोस्टलवाद का विकास खाड़ी क्षेत्र के प्रवासी कामगारों के मध्य हुआ है चूँकि इनमें से अधिकांश चर्च प्रकृति में परा-राष्ट्रीय हैं। उदाहरण के तौर पर, 'हेवनली फीस्ट चर्च' की प्रमुख गतिविधियाँ जीसीसी देशों में हैं और उनकी पश्चिमी एशिया क्षेत्र में 25 से अधिक धर्मसभाएँ हैं।

प्रवासी संपर्क, निर्बाध वित्तीय प्रवाह तथा सामाजिक प्रेषण में गहरे प्रभाव ने केरल में धार्मिक संस्थाओं के दृष्टिकोण और कार्यकरण का महत्वपूर्ण रूप से पुन:अभिमुखीकरण किया है। बांग्लादेश में प्रवासी समुदाय के संबंध में केटी गार्डनर का अध्ययन इंगित करता है कि लौटकर आए प्रवासी इस्लाम के शुद्धतावादी और रूढ़िवादी रूपांतर में संलग्न होते हैं और स्थानीय प्रथाओं विशेषकर सूफी उपासना पद्धति को अस्वीकृत करते हैं। इसी प्रकार लेविट भी स्थानीय डोमिनिकन चर्च में यूएसए से डोमिनिकन प्रवासियों के आध्यात्मिक प्रभाव का अन्वेषण करते हैं और तर्क देते हैं कि प्रवासी 'सामाजिक प्रेषण' के माध्यम से घरेलू धार्मिक विन्यास में जबर्दस्त परिवर्तन करते हैं।[xxxv]

मजेदार बात यह है कि कुरियन (2014) लिखते हैं कि 'न केवल प्रेषण के परिणामस्वरूप अपितु उनके प्रवासियों की विदेशी शाखाओं के विकास की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप भी धार्मिक संस्थाओं में जबर्दस्त रूपांतरण होता है।'[xxxvi] मेजबान विन्यास में प्रवासियों के पुन:अभिमुखीकरण के माध्यम से पैदा हुए विचार और प्रथाएँ सामाजिक प्रेषण के माध्यम से प्रसारित हुए थे जिन्होंने केरल के सीरियाई ईसाई संप्रदायों की पारंपरिक संरचना को असावधानीवश पुन: आकार प्रदान किया है। एक प्रतिवादी ने बताया कि 'मैं शारजाह प्रवास से पूर्व एक स्टांच जेकोबियन था। किंतु विदेशी रेगिस्तान की कठोरता मुझे ईश्वर के निकट ले आई। जब मैं जरूरत में था तो ग्रेस फेलोशिप पास्टर मेरे पास नियमित रूप से आते थे और मैंने यूएई में बैपटिज्म करा लिया। केरल वापिस लौटने के पश्चात, मैंने अपने यूएई के मित्रों के साथ मिलकर 'ग्रेस फेलोशिप चर्च' (परा-राष्ट्रीय नव-पेंटेकोस्टल चर्च) की स्थापना की। पिछले 7 वर्षों के दौरान मैंने स्थानीय समुदाय में लगातार दो दिवसीय आध्यात्मिक अभिसमयों का आयोजन किया। मैं पथनीमथीट्टा में लौटकर आए प्रवासियों से मिला जिनकी कहानी मेरी जैसी थी और वे केरल में नव-पेंटेकोस्टल चर्च के अग्रणी बने। मैंने निजी तौर पर देखा है कि चर्च कई प्रतिवादियों के केन्द्र बन गए हैं और धार्मिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी बहुत अधिक बढ़ गई है।

एक पास्टर ने कहा 'हेवनली फीस्ट अब प्रवासी समुदाय में विस्तृत पेरिश वाला एक सुस्थापित चर्च है। हमारे चर्च के जीसीसी देशों में उत्साही अनुयायी हैं और खाड़ी क्षेत्र में लगभग 25 पास्टर पूर्णकालिक रूप से काम कर रहे हैं। 'तंबू उपासना' (अस्थायी तंबुओं में उपासना) जो कि एक ओल्ड टेस्टामेंट अवधारणा है को केरल में नव-पेंटेकोस्टल द्वारा लोकप्रिय बना दिया गया है और चर्च का दावा है कि उनके समूचे केरल में लगभग 5000 तंबू हैं। एक नियमित रविवार उपासना पर पथनीमथीट्टा में एक तंबू में देखने पर यह स्पष्ट दिखाई देता है कि अधिकांश लोग या तो खाड़ी से लौटकर आए हुए लोग हैं या प्रवासियों के रिश्तेदार हैं। एक प्रतिवादी ने टिप्पणी की कि 'हमारे परिवार में हेवनली से परिचय मेरी बहन द्वारा कराया गया जो कि कतर में एक नर्स है। तंबू उपासना शुरु करने के पश्चात हमने कई चमत्कार देखे हैं।'

कुवैत में, पास्टर जोसी जोसेफ, जो कि हेवनली फीस्ट पेरिश के पास्टर हैं, ने कहा कि 'प्रारंभ में हमें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा और भारत में बहुत ठंडी प्रतिक्रिया मिली। परंतु हमें खाड़ी प्रवासियों से

विशेषकर कुवैत के प्रवासियों से अनपेक्षित प्रतिक्रिया मिली। वर्तमान में समूचे जीसीसी क्षेत्र में हमारे लगभग 60 पेरिश हैं और खाड़ी प्रवासियों की पहल से टीवी चैनल चल रहे हैं। अब हम प्रवासियों और उनकी संबंधियों की सहायता से केरल में सुदृढ़ बन रहे हैं।

केरल में खाड़ी पॉकेटों में अनेकों नव-पेंटेकोस्टल चर्च हैं और उनमें से अधिकांश प्रेषणों के समर्थन से फल-फूल रहे हैं। उदाहरण के तौर पर, सीरियाई मार्थोमा चर्च के बिशप बर्नाबास टिप्पणी करते हैं कि 'नव-पेंटेकोस्टल केरल में प्रवासियों और प्रत्यक्ष उपभोक्तावाद का सह-उत्पाद है। नव-पेंटेकोस्टल चर्च एक नई घटना हैं और खाड़ी प्रवासियों के अनिश्चित जीवन की कीमत पर फल-फूल रहे हैं। उन्होंने आगे बताया कि नव-पेंटेकोस्टल समूहों के बहुत से सदस्य पारंपरिक सीरियाई चर्च के साथ अपने संबधों को दृढ़ता से नहीं निभाते। मजेदार बात यह है कि अतिवादी समूहों के कई सदस्य सीरियाई और नव-पेंटेकोस्टल - दोनों चर्चों में दोहरी सदस्यता रखते हैं और सभी संस्कार (विवाह, बैपटिज्म, अंतिम संस्कार) के लिए पारंपरिक चर्च को प्राथमिकता देते हैं। प्रेषणों का व्यापक बहाव, आधुनिकता और उपभोक्तावाद के कारण परिवारों के जीवन में बहुत अनिश्चितताएँ और अस्थायित्व भी आ गया था। नई पीढ़ी के चर्च इस भंगुर परिप्रेक्ष्य का इस्तेमाल कर रहे हैं। चमत्कार, वित्तीय संपन्नता तथा व्यक्तिगत आर्थिक विकास कुछ ऐसी प्रमुख शिक्षाएँ हैं जो कि उद्विग्न और अनिश्चित जनता के लिए भली-भाँति उपयुक्त हैं।

उल्लेखनीय बात यह है कि अधिकांश नए चर्च प्रकृति में बिल्कुल परा-राष्ट्रीय हैं जिनकी गहरी जड़ें युवा पीढ़ी में हैं। नव-पेंटेकोस्टल नई पीढ़ी के चर्च काफी कट्टर हैं और अपनी शिक्षाओं में उच्च कठोरता का पालन करते हैं। उदाहरण के तौर पर वे ईसाई संप्रदायों सहित अन्य धर्मों के त्योहारों और उत्सवों में भाग लेने को स्पष्ट रूप से मना करते हैं। ये चर्च कभी सार्वभौमिकता का समर्थन नहीं करते और अपने अनुयायियों के लिए एक शुद्धतावादी नियम बनाते हैं। इसमें से अधिकांश चर्च बिल्कुल अनन्यतावादी हैं और एक 'पुनर्जन्म परा-राष्ट्रवादी पहचान' को बढ़ावा देते हैं।

यद्यपि नव-पेंटेकोस्टल पदानुक्रम की बुनावट बहुत ढीली है, फिर भी खाड़ी प्रवासी संघ हेवनली फीस्ट के सुदृढ़तम स्तंभ हैं। जो प्रवासी केरल वापिस लौट आए हैं, वे भी खाड़ी संघों की गतिविधियों के माध्यम से जुड़े रहते हैं। मजेदार बात यह है कि लगभग सभी चर्चों के केरल में सुसंगठित खाड़ी संघ हैं और वे निर्णय प्रक्रिया में शक्तिशाली लॉबी के तौर पर उभरे हैं। इसके परिणामस्वरूप एक खाड़ी आधारित सक्रिय नेटवर्क के समर्थन से केरल में नई पीढ़ी के करिश्माई, नव-पेंटेकोस्टल चर्च मुकुलित हो रहे हैं और मध्य केरल के कुछ नगरों में विशेष तौर पर 'पुनर्जन्म ईसाई' के लिए आवासीय परियोजनाएँ हैं। उदाहरण के तौर पर तिरुवल्ला के बाहरी क्षेत्र (जो कि एक संपन्न खाड़ी पॉकेट है) में 'ज़ायन हाउसिंग सोसाइटी' विशेष तौर पर 'ग्रेस फेलोशिप' के सदस्यों के लिए नियोजित की गई है। 'ज़ायन सोसाइटी' के एक सदस्य ने इंगित किया कि 'यह आवासीय परियोजना खाड़ी से लौटने के पश्चात 'पुनर्जन्म' के लिए एक साथ रहने हेतु नियोजित की गई थी। इसमें एक बड़ा प्रार्थना कक्ष है और अन्य नगरों में भी ऐसी ही परियोजनाएँ हैं।

1980 के दशक के मध्य में, अमेरिकी उपदेशकों के साथ कुछ नव-पेंटेकोस्टल पास्टरों ने सीरियाई चर्च को भेदने के लिए कुछ प्रयास किए थे, किंतु पांरपरिक चर्चों के कठोर विरोध के कारण वे सफल नहीं हो सके। कुवैत पर ईराक के हमले और उसके पश्चात जीसीसी में अनिश्चितताओं के कारण सीरियाई संप्रदायों के मध्य नव-पेंटेकोस्टल चर्चों की अप्रत्याशित वृद्धि एक मुख्य पड़ाव रही। खाड़ी में सीरियाई ईसाइयों का अलग-थलग होना, प्रतिकूल वातावरण तथा आध्यात्मिक पुन:अभिमुखीकरण का केरल में प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा और यह भेजने वाले समाज में कट्टर पहचान और क्षेत्र के निर्माण के लिए उत्तरदायी है। नव-पेंटेकोस्टलवादी समूह स्वयं को शेष विश्व से अलग रखते हैं और शेष संप्रदायों से 'अनन्य' आध्यात्मिक पहचान रखते हैं।

'होली लैंड' तीर्थयात्राएँ और 'बाइबिलिकल इजराइल' पर बल

नव-पेंटेकोस्टल जीसीसी क्षेत्र के रास्ते से केरल में भिन्न 'अमेरिकन ईवेंजेलिकल' धर्मशास्त्रीय अवधारणाएँ और परंपराएँ लाए हैं। टाइद, टेली ईवेंजेलिस्ट, गोस्पेल चैनल, प्रार्थना एवं उपासना, होली लैंड (इजराइल) तीर्थयात्रा, 'बाइबिलिकल इजराइल' का विचार तथा कुछ अवधारणाएँ, जिनका उद्भव अमेरिकन ईवेंजेलिकल धर्मशास्त्र में हुआ है, केरल में बहुत लोकप्रिय हैं। मजेदार बात यह है कि अमेरिकन ईवेंजेलिकल विचार खाड़ी प्रवासियों के प्रभाव से केरल में लोकप्रिय हुए हैं।

वर्तमान में, इजराइल/ फिलिस्तीन (होली लैंड) की तीर्थ यात्रा अत्यधिक लोकप्रिय है और केरल से हजारों अनुयायी प्रति वर्ष होली लैंड की यात्रा करने के लिए इजराइल की तीर्थ यात्रा करते हैं। यद्यपि लागत के कारण होली लैंड की तीर्थ यात्रा का केरल में कभी अस्तित्व नहीं था, परंतु यह प्रथा खाड़ी प्रवासियों में अब बहुत लोकप्रिय हो गई है। इजराइल/फिलिस्तीन की तीर्थ यात्रा एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू है जो कि सीरियाई ईसाई उत्प्रवासियों में व्यापक रूप से मौजूद है। प्रत्येक वर्ष विशेषकर गर्मी की छुट्टियों में जीसीसी देशों के लगभग सभी चर्च जॉर्डन के रास्ते होली लैंड की तीर्थ यात्रा आयोजित करते हैं।

शायद खाड़ी उत्प्रवासियों के प्रभाव के कारण इजराइल/ फिलिस्तीन की तीर्थ यात्रा केरल में भी बहुत लोकप्रिय हो गई है। खाड़ी प्रवासियों की इजराइल और फिलिस्तीन की यात्रा-कथाओं का केरल के लोगों पर जबर्दस्त प्रभाव पड़ा है और वर्तमान में बहुत सी ट्रेवल एंड टूर ऐजेन्सियाँ इजराइल के भ्रमण की सुविधाएँ प्रदान कर रही हैं। इसके अतिरिक्त, कुछ मलयालम दैनिक ने भी ऐसे भ्रमण के लिए पहल की हैं।

मजेदार बात यह है कि 'होली लैंड' की यात्रा के साथ-साथ 'बाइबिलिकल इजराइल' का सिद्धांत भी समाज में प्रवेश कर रहा है। बाइबिलिकल इजराइल के विचार का प्रतिपादन 1970 के दशक में अमेरिकन एपिस्कोपल चर्च ने किया था और इजराइल को दी जाने वाली प्रचुर वित्तीय सहायता को तर्कसंगत बनाने के लिए यूएस प्रशासन द्वारा इसका अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन किया गया था। यूएसए में रूढ़िवादी ईसाई

विशेषकर रिपब्लिकन समर्थक मानते थे कि इजराइल को खुला समर्थन देना यहूदी राज्य के संरक्षण के लिए एक बाइबिलिकल आदेश की पूर्ति करता है।[xxxvii] यह बाइबिल की आड़ में इजराइल पर अधिकार को तर्कसंगत सिद्ध करने के लिए एक संकीर्णतापूर्ण और रणनीतिक दर्शन था और अमेरिकल टेलीईवेंजेलिस्ट अक्सर इस पहलू पर जोर देते थे।[xxxviii]

पूर्वी रूढ़िवादी इतिहास की कठोर जड़ों वाला केरल ऐतिहासिक रूप से 'इजराइल' के विचार की तुलना में अरब/ चेल्डिया/ सीरियाई परंपराओं के अधिक निकट था। वर्तमान में, केरल के ईसाइयों के बीच बाइबिलिकल इजराइल की धर्मशास्त्रीय समझ तथा इजराइल के लिए जबर्दस्त समर्थन है।

इसके अलावा, इस्लाम बहुल जीसीसी देशों में रहने की लंबी अवधि और घटिया कार्य दशाएँ गलती से मेजबान देश से अलगाव की भावना पैदा करती हैं और इस विकट स्थिति का इस्तेमाल नई पीढ़ी के चर्चों द्वारा 'बाइबिलिकल इजराइल' के विचार को पुष्ट करने के लिए किया जा रहा है। केरल के तट पर इजराइल के लिए समर्थन विस्तृत रूप से खाड़ी प्रवासियों और नव-पेंटेकोस्टल चर्च के सक्रिय हस्तक्षेप के माध्यम से प्रविष्ट हुआ है। इसके अतिरिक्त, कोट्टायम में 'एपोस्टोलिक जायन चर्च' यहूदी राष्ट्र के सुख के लिए नियमित प्रार्थनाएँ आयोजित करता है और 'होली लैंड' की तीर्थ यात्रा को बढ़ावा देता है। अत: हम नव-पेंटेकोस्टल समूहों के उपदेशों और गतिविधियों के माध्यम से केरल में अमेरिकन धर्मशास्त्रीय अवधारणाओं के व्यापक प्रसार के स्पष्ट प्रभाव को देख सकते हैं।

साजी थॉमस, जो कि 'ग्रेस फेलोशिप' के एक सक्रिय सदस्य हैं, इंगित करते हैं कि 'हमारा चर्च इजराइल के बारे में जानकारी देने के लिए बहुत सक्रिय रहता है क्योंकि इजराइल के बारे में जानकारी इजराइल दोबारा जाने की इच्छा पैदा करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। हमारे यहाँ यहूदी प्रदेश के लिए विशेष प्रार्थनाएँ हैं और चर्च नियमित रूप से इजराइल के लिए होली लैंड तीर्थ यात्राएँ आयोजित करता है। जब मैं यूएई में कार्य कर रहा था तो मैंने परिवार सहित इजराइल का भ्रमण किया था और मैं अगले वर्ष माँ को ले जाने की योजना बना रहा हूँ।' विख्यात धर्मशास्त्री और सीरियाई ऑर्थोडॉक्स सेमिनरी के पूर्व प्रिंसिपल फादर के एम जॉर्ज ने प्रेक्षण किया कि 'केरल के ईसाइयों के मध्य होली लैंड भ्रमण की इच्छा बहुत अधिक है और यह वास्तव में एक नई घटना है। ये दौरे प्रारंभ में 1990 के दशक के अंत में जीसीसी देशों में प्रवासी समुदायों में शुरु हुए और अंतत: खाड़ी प्रवासियों ने केरल का इनसे परिचय कराया। अब विभिन्न संप्रदायों के पेरिश इजराइल भ्रमण के लिए एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। कुछ क्लर्जी इन दौरों को सुगम बनाने के लिए अपनी टूर एजेन्सियाँ चला रहे हैं।

टाइद के माध्यम से मुक्ति

एक अन्य धर्मशास्त्रीय अवधारणा जो कि खाड़ी प्रवासियों के माध्यम से लोकप्रिय हुई है, वह है - 'टाइद'। टाइद ओल्ड टेस्टामेंट की एक अवधारणा है जिसमें आय का दसवाँ हिस्सा निर्धनों और जरूरतमंदों के लिए दान किया जाता है। यह केरल के सीरियाई चर्चों में व्यापक रूप से मौजूद नहीं थी। टाइद को

नव-पेंटेकोस्टल द्वारा विशेषकर प्रवासियों के मध्य आर्थिक सफलता देने के लिए धन्यवाद ज्ञापन के चिह्न के तौर पर लोकप्रिय बनाया गया है। पूर्व में, वार्षिक अंशदान और समारोह/ त्योहार के लिए योगदान चर्च की आय का प्रमुख स्रोत थे। हालाँकि, मेजबान विन्यास में खाड़ी प्रवासियों को प्राप्त अप्रत्याशित धन और पूंजी के प्रत्युत्तर में यह उनके मध्य व्यापक रूप से प्रचलित प्रथा बन गई है। एक स्थानीय सीरियाई चर्च के न्यासी उल्लेख करते हैं कि पिछले तीन दशकों में चर्च की आय 300 गुना बढ़ गई है। एक खाड़ी प्रवासी इंगित करते हैं कि 'टाइद का नियमित योगदान आय और कृपा को कई गुना बढ़ा देगा।' एक अन्य प्रतिवादी टिप्पणी करते हैं कि 'मैं एक आर्थिक रूप से कमजोर परिवार से खाड़ी गया था। वर्तमान में मेरे पास प्रचुर मात्रा में धन है और इसलिए मैंने अपनी आय का दसवाँ हिस्सा भारत में मिशनरी गतिविधियों के लिए देने का निर्णय लिया है।' टाइद के माध्यम से लोग मुक्ति और अप्रत्याशित धन के संरक्षण की आशा कर रहे हैं। विख्यात धर्मशास्त्री फादर के एम जॉर्ज ने कहा 'टाइद सीरियाई ईसाइयों के मध्य कभी लोकप्रिय नहीं रहा था। खाड़ी प्रवासियों ने केरल में इस अवधारणा को लोकप्रिय बनाया। टाइद नव-पेंटेकोस्टल चर्च की रीढ़ है क्योंकि वे प्रचार करते हैं कि मुक्ति और संपन्नता दोनों ही अत्यधिक टाइद के योगदान के माध्यम से अर्जित किए जा सकते हैं।

पेंटेकोस्टल ने टेली-ईवेंजेलिस्ट के साथ अधिक अमीरी और भौतिक संपन्नता हेतु एक मार्ग के तौर पर धार्मिक योगदान की अवधारणा को पुन: आकार प्रदान किया है और उसे लोकप्रिय बनाया है। नव-पेंटेकोस्टल ने एक अनुयायी के लिए टाइद को एक अनिवार्य कर्तव्य बनाया है और यह उपदेशकों और टेली-ईवेंजेलिस्ट के प्रमुख राजस्व का कारण बना है। आलोचकों ने आरोप लगाया है कि नव-पेंटेकोस्टलिस्ट का अनेक समूहों में बँटना प्रमुख तौर पर वित्तीय विवादों के कारण है जो कि टाइद के बेहिसाबी प्रवाह के कारण हुए हैं। अमेरिकन गोस्पेल टीवी चैनलों के समान, टाइद के विचार को मलयालम टेली-ईवेंजेलिस्ट द्वारा भौतिक आशीर्वाद के लिए प्रमुख मार्ग के तौर पर चिह्नांकित किया गया है।

मुक्ति धर्मशास्त्र और वाणिज्यिक ईसाइयत

केरल की समाजवादी-साम्यवादी धरोहर का ईसाई समुदाय पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। यद्यपि चर्च पदानुक्रम, विशेषकर कैथोलिक की साम्यवादी पार्टी के साथ अनबन रहती थी, फिर भी कई बिशप और क्लर्जी मुक्त रूप से मार्क्सवादी विचारों का समर्थन करते थे और मुक्ति धर्मशास्त्र का चर्च के नेतृत्व पर गहरा प्रभाव था। मुक्ति धर्मशास्त्र निर्धन की दुर्दशा के माध्यम से धर्मग्रंथों को समझने का एक प्रयास है।

ईसाई धर्मशास्त्र की यह शाखा 1960 और 1970 के दशक में लेटिन अमरीका में विकसित हुई थी और दमितों और निर्धनों की मुक्ति पर केन्द्रित थी।[xxxix] मुख्य जोर धन के पुन: वितरण पर था जिसमें निर्धन किसानों को धन के हिस्से के लिए संग्राम की अनुमति थी। सीरियाई संप्रदाय के युवा और छात्र आंदोलनकारियों ने क्रांतिकारी धर्मशास्त्र को अंगीकार किया और यह 1970 और 80 के दशक में पेरिशों

में बहुत लोकप्रिय था। 1990 के दशक के अंत में केरल के सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्रों में वामपंथ औरा प्रगतिवादी ताकतों में कमी और वामपंथी दलों के बल की राजनीति की ओर झुकाव ने चर्च के प्रगतिवादी आंदोलन को भी प्रभावित किया। वामपंथी विचारों के धराशायी होने और व्यापक स्तर पर प्रवास के प्रभाव से प्रगतिवादी धर्मशास्त्रीय बंधनों के परिप्रेक्ष्य को नुकसान पहुँचा और केरल में 'वाणिज्यिक ईसाइयत' के विचार को ऊपर उठाया गया। महत्वाकांक्षी अमीर प्रवासियों के उदय और महत्वाकांक्षी और अनिश्चित सामाजिक परिस्थिति ने मुक्ति संबंधी आचरणों को और अधिक कमजोर कर दिया तथा केरल में 'वाणिज्यिक ईसाइयत' को सुदृढ़ बना दिया। खाड़ी देशों को व्यापक स्तर पर प्रवास ने 'मुक्ति' विचारों के परिप्रेक्ष्य को संकट में डाल दिया और इस खालीपन को कट्टरपंथी धार्मिक समूहों द्वारा भर दिया गया। विख्यात मुक्ति धर्मशास्त्री फादर सैम कोशी टिप्पणी करते हैं कि 'प्रारंभ में चर्च की मानवीयता और सामाजिक कृत्य युवा पीढ़ी में बहुत लोकप्रिय थे। किंतु भारी मात्रा में प्रेषण के साथ, उपभोक्तावादी और करियरवादी सोच को अधिक गति मिली, जिसने 'वाणिज्यिक ईसाइयत' और 'संपन्नता ईसोपदेश' के परिप्रेक्ष्य को निरपवाद रूप से सुदृढ़ बनाया।

प्रेषण, जीर्णोद्धार तथा धार्मिक निवेश

वर्तमान में, सीरियाई ईसाई अपने धर्म का एक कार्यनीतिक प्लेटफार्म के रूप में प्रवास से अर्जित आर्थिक पूंजी को सामाजिक प्रतिष्ठा, स्तर और मूल समाज में वैधता अर्जित करने और केरल से संपर्क बनाए रखने तथा मूल समुदाय में सुगम प्रवेश के रूप में परिर्वतित करने के लिए उपयोग कर रहे हैं। प्रवास और प्रेषणों ने सीरियाई ईसाई चर्चों में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया है। खाड़ी में प्रवास करने वाले अधिकांश लोग मध्यवर्गीय या निर्धन वर्ग से हैं। विदेश से आने वाले प्रेषणों के प्रवाह ने खाड़ी में प्रवासियों को भेजने वाले परिवारों के ऊर्ध्वगमन को बढ़ावा देकर केरल की वर्ग संरचना को परिवर्तित किया है। प्रवासियों को भेजने वाले परिवारों ने खाड़ी में अर्जित आय का अधिकाधिक उपयोग केरल में जन क्षेत्र में धर्म को बढ़ावा देने में किया है जिससे सामाजिक पदानुक्रम में उनकी उपस्थिति और शक्ति बढ़ी है। इसने एक ओर समूचे केरल में चर्चों/ मस्जिदों/ मंदिरों और धार्मिक प्रतिष्ठानों में अधिकाधिक निवेश में योगदान दिया है। 1990 के दशक के प्रारंभ से विशेषकर खाड़ी पॉकेटों में मंदिरों, चर्चों, मस्जिदों और अन्य धार्मिक संस्थानों का प्रसार हुआ है।

सफल प्रवासियों ने प्रेषणों और बचतों का सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्रों - शादियों, शिक्षा, मंदिरों, चर्चों में निवेश किया है। मूल समाज में प्रवासियों की अनुपस्थिति को धार्मिक संस्थाओं और दान में खर्च करने के ढंग से पूरा किया जाता है। धार्मिक संस्थाओं को प्रवासियों का योगदान उसकी उपस्थिति के प्रदर्शन के लिए किया जाता है, चाहे वह खाड़ी में ही क्यों न रह रहा हो। सीरियाई ईसाइयों ने अपनी सामाजिक गतिशीलता को चर्चों, पेरिश हॉल के जीर्णोद्धार या निर्माण, पर्सोनेज, विकारों के लिए कार, मेहराबदार द्वारों, फ्लेग स्टाफ और स्मारक हॉलों के निर्माण के माध्यम से प्रदर्शित करने का प्रयास किया है।

स्थानीय बिशप बताते हैं कि लगभग नब्बे प्रतिशत पुराने चर्चों का या तो जीर्णोद्धार, पुनर्निर्माण किया गया है या पुराने वाले का ध्वंस करके नए चर्चों का निर्माण किया गया है। सीरियाई ऑर्थोडॉक्स चर्च के विकार जनरल कहते हैं कि योगदान के निर्बाध प्रवाह से चर्च विशाल निर्माण कार्य के लिए अग्रसर हुए हैं। सीरियाई मार्थोमा के बिशप मार बर्नाबास बताते हैं कि 'प्रवासी निर्माण परियोजनाओं के लिए बहुत मात्रा में धन का योगदान करते हैं और स्थानीय विकार अब पास्टोरल केयर के स्थान पर निर्माण स्थलों पर अधिक समय बिताते हैं।' चर्च भ्रमण के दौरान एक पेरिश के सचिव द्वारा की गई घोषणा बहुत मजेदार थी क्योंकि उन्होंने कहा कि 'पेरिश हॉल में 'फैमिली प्लॉक' की स्थापना शनिवार तक की जाए। जो भी फैमिली प्लाक को खड़ा करने में रुचि रखते हों, कृपया न्यासी को तीन लाख रुपये का योगदान करें। पूछताछ करने पर मैंने पाया कि लगभग 70 पेरिश सदस्यों ने पहले ही आवश्यक राशि का भुगतान कर दिया है और वे सभी या तो प्रवासी या वापिस लौटकर आए प्रवासी थे।

छुट्टियों में जब प्रवासी केरल आते है तो कुशन, कैंडल स्टैंड, पल्पिट कवर, अल्टार कैंडल्स, कारपेट, अल्टार कर्टेन दान में देने की सामान्य प्रथा है। समाज से प्रवासी की अनुपस्थिति इन स्मारक दानों के माध्यम से पूरी की जाती है। उत्प्रवासी जब छुट्टियों में या संविदा समाप्त होने पर स्थायी तौर पर अपने घर लौटते हैं तो स्थानीय धार्मिक संस्थाएँ उत्प्रवासियों के समुदाय के साथ एकीकरण हेतु सुव्यवस्थित सहायता प्रदान करने में केन्द्रीय भूमिका निभाती हैं। केरल में निर्माण का मनोरंजक कार्यक्रम स्थानीय 'पेरिश कॉम्प्लेक्स' के विकास के लिए उत्तरदायी है। चर्च परिसर में चर्च, फ्लेग स्टाफ, आर्क गेट, मार्बल लैंप, पेरिश हॉल, पार्सनेज और कभी-कभी किराये के लिए भवन भी शामिल होते हैं। चर्च के दस्तावेजों से पता चलता है कि चर्च का संरक्षण हथियाने के लिए प्रवासियों के परिवारों द्वारा समूचे परिसर का प्रायोजन किया गया है।

धार्मिक पूंजी अर्जित करके सामाजिक गतिशीलता प्राप्त करने की प्रक्रिया अक्सर समुदाय के भीतर विद्यमान शक्ति संरचना को भंग करती है। समाज ने नए वर्ग को, जिसको सामान्य तौर पर 'नव धनाढ्य' की संज्ञा दी जाती है, उभरते हुए देखा है। यह जानना आवश्यक है कि नव धनाढ्य के महत्वपूर्ण विकास ने ग्रामीण शक्ति संरचना को अस्तव्यस्त किया है। पारंपरिक रूप से कुछेक जमींदार तथा कुलीन परिवारों की स्थिति और रुतबे को अब चुनौती दी गई है।

पुराने चर्चों का ध्वंस अक्सर समुदाय में संघर्ष और कानूनी विवाद उत्पन्न करता है, जिसे अक्सर पुराने जमींदार परिवारों और नव-धनाढ्य के मध्य के संघर्ष के रूप में जाना जाता है। उभरता धनवान वर्ग चर्च को सामंतवादी संरचना का प्रतीक मानता है और पुराने चर्चों का पुनर्निर्माण और विध्वंस अक्सर समुदाय की पुरानी वर्ग संरचना पर हमला माना जाता है। तथापि प्रवास ने परिवारों से रुतबे और शानदार मनमोहक गतिविधियों में निवेश के लिए पूंजी का उपयोग करवाया है जिससे स्थानीय शक्ति संरचना में परिवर्तन हुए हैं। उदाहरण के तौर पर, एक पेरिश में एक नए चर्च का निर्माण कार्य दो समूहों, निश्चित ही, पुराने परंपरावादी धनवानों और 'नव धनाढ्य' प्रवासी परिवारों के मध्य कानूनी लड़ाई के कारण लगभग 5 वर्ष तक रुका रहा। पारंपरिक गुट के बुजुर्ग सदस्य ने व्यंग्यात्मक टिप्पणी की कि

'पुराना चर्च हमारे पूर्वजों द्वारा बनवाया गया था और चर्च के मामलों के विनियमन के लिए केवल कुछ परिवारों के पास ही संसाधन थे। अब अधिकांश पेरिशनरों के पास प्रवास के कारण धन आ गया है और ये 'नव धनाढ्य' पुराने भवन को तोड़कर नया भवन बनाना चाहते हैं। पुराना चर्च बहुत सुदृढ़ था और नए चर्च की कोई आवश्यकता नहीं थी किंतु यह चर्च का संरक्षण हथियाने और पदानुक्रम में ऊपर उठने का एक परोक्ष प्रयास है।

नव धनाढय प्रवासियों द्वारा चर्च को अत्यधिक योगदान देना और कंक्रीट के धार्मिक भवन खड़े करना चर्च के पदानुक्रम पर कब्जा करने का एक गुप्त प्रयास है, जिससे समुदाय की सामंतवादी संरचना के कारण उनको वंचित रखा गया था। अतएव समुदाय में नव निर्माणों में उछाल को भूतकाल के वर्ग पदानुक्रम के विध्वंस और नए सामाजिक संरूपण का निर्माण माना जा सकता है। समान्य तौर पर नव धनाढ्य प्रवासी परिवारों को स्थानीय डायोसीज़न बिशपों का समर्थन प्राप्त होता है क्योंकि चर्च का पदानुक्रम डायस्पोरा से प्रेषण से पर बहुत निर्भर रहता है।

पथनीमथीट्टा में, क्लर्जी व्यवस्था में नव धनाढ्य प्रवासी परिवारों के प्रवेश के कारण चर्च में उग्र संघर्षों को रेखांकित करते हैं। बिशप मार कुरिलोस टिप्पणी करते हैं कि 'प्रवासी शिक्षा या स्वास्थ्यचर्या की गतिविधियों को समर्थन देने में रुचि नहीं रखते क्योंकि विद्यालयों या अस्पतालों के निर्माण से उन्हें प्रसिद्धि पाने में सहायता नहीं मिलती और इससे वे सामाजिक पदानुक्रम में प्रवेश नहीं कर पाते। अत: उनमें से अधिकांशत: अपने सामाजिक रुतबे को बढ़ाने के लिए स्थानीय पेरिश में निवेश या योगदान करना चाहते हैं।

वस्तुत:, केरल में 20वीं शताब्दी के प्रारंभ से ही सीरियाई संप्रदाय विद्यालयों, कॉलेजों और अस्पतालों की स्थापना करने में अग्रणी रहे थे और चर्च ने शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। हालाँकि वर्तमान में चर्च के संसाधन अन्य सामाजिक कृत्यों के स्थान पर निर्माण के क्षेत्र में प्रयोग किए जा रहे हैं। अत: सीरियाई चर्चों की वर्तमान प्रवृत्ति इंगित करती है कि धर्म/ स्थानीय पेरिश के क्षेत्र का उपयोग प्रवासियों द्वारा सामाजिक वैधता प्राप्त करने और समुदाय पर पलटवार करने के लिए किया जा रहा है। चर्च में सक्रिय रूप से जुड़ाव और भागीदारी लोगों की नव अर्जित आर्थिक गतिशीलता के प्रसार के लिए है।

उपासना केन्द्र व्यक्तिगत सफलता को मान्यता दिलवाने और उसका प्रदर्शन करने के भी स्थान हैं। चर्च का संरक्षण अथवा पेरिश के पद यथा सचिव या न्यासी को सामाजिक गतिशीलता और मान्यता के संकेत के रूप में देखा जाता है। चर्च के पदाधिकारियों के वार्षिक चुनाव व्यक्तिगत सफलता और सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता के प्रदर्शन के लिए कठोर प्रतियोगिता का स्थान बन गए हैं। एक विकार बताते हैं कि चर्च में नेतृत्व के लिए प्रतियोगिता अक्सर संघर्षों और निजी शत्रुता में समाप्त होती है। चर्च पदानुक्रम के चुनाव एक महीने तक चलते हैं जिसमें उम्मीदवारों द्वारा घर-घर जाकर प्रचार किया जाता है जो कि केरल में कोई सामान्य प्रथा नहीं थी।

प्रवासी चर्च के कार्यों में अपनी भूमिका बढ़ाने के लिए उग्रतापूर्वक मोलभाव करते हैं। उदाहरण के लिए अधिशेष धन के आने से पेरिशों को ऊपर उठाकर केथेड्रल के समकक्ष बनाने की बहुत मांग रहती है। पूर्व में कैथेड्रल संज्ञा अधिक सदस्यों/ आय वाले पेरिशों को दी जाती थी और साथ ही यह बिशप हाउस के साथ जुड़ा हो सकता था। इस नई मांग के पीछे कारण यह है कि चर्च परिषद में कैथेड्रल अधिक ले-रिप्रेजेंटेटिव भेज सकता है और लेइटी बिशप के चुनाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। सीरियाई ऑर्थोडॉक्स संप्रदाय में, कतिपय नव-निर्मित पेरिशों को विशेष दर्जा और चर्च परिषद में अधिक ले-रिप्रेजेंटेटिव दिए गए हैं क्योंकि पेरिश डायोसीज़ के वार्षिक अभिदान को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाने पर सहमत हुए हैं। अत: पेरिश समितियों और परिषदों को सामाजिक गतिशीलता के तौर पर देखा जाता है और ये व्यक्तिगत संपन्नता का प्रदर्शन करने का स्थान बन गए हैं।

धार्मिक कृत्यों और समारोहों का वस्तुकरण और पुनरुद्धार

प्रवासियों के लिए आर्थिक पूंजी को प्रतिष्ठा और रुतबे में बदलने हेतु धार्मिक कृत्य करना एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र है। विशेषकर खाड़ी में प्रवास ने धार्मिक कृत्यों की प्रथाओं के वस्तुकरण की चल रही प्रक्रिया को तेजी प्रदान कर दी है। स्थानीय त्योहारों और समारोहों के व्यापक पुनरुद्धार को उत्प्रवास के परिप्रेक्ष्य में समझना चाहिए। उत्प्रवासी की स्थानीय त्योहारों में निरंतर रुचि धार्मिक कृत्यों के घटकों के प्रदर्शन से संबंधित है। पास्टर, ज्योतिषी, तंत्री, गॉडमैन तथा धार्मिक कृत्य विशेषज्ञ आमतौर पर सभी बढ़ते धार्मिक बाजार का दोहन करने में समर्थ हैं। अतएव, धार्मिक गतिविधियों में नए उभार ने धार्मिक कृत्यों और समारोहों का व्यापक रूप से वाणिज्यीकरण कर दिया है। प्रवास संबंधी धन ने धार्मिक कृत्यों की प्रथाओं का सतत वर्धनीय वस्तुकरण कर दिया है जिससे स्थानीय चर्च जुलूस समारोह के लिए नए प्रस्तुतिकार और प्रायोजक जरूरी हो गए हैं। ईसाई अप्रवासियों के मध्य धार्मिक समारोहों तथा सामाजिक अवसरों यथा बैप्टिज्म या शादी पर धन के अत्यधिक व्यय की घटनाएँ बढ़ रही हैं। प्रेषण का बड़ा हिस्सा धार्मिक कृत्यों संबंधी गतिविधियों की प्रस्तुति आयोजित करने में उपयोग हो जाता है जो कि प्रवासी परिवार के सम्मान को बनाए रखने और उसमें वृद्धि का कार्य करते हैं।

केरल में जीसीसी देशों के उत्प्रवासियों के मध्य विभिन्न धार्मिक स्थानों की तीर्थ यात्रा की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है। ये तीर्थयात्राएँ और उत्प्रवासियों के मूल चर्चों के समारोहों में भागीदारी मूल समाज के साथ उनके लगाव को प्रदर्शित करती है। स्थानीय चर्च पेरुनल या तीर्थ स्थानों के समारोह में भागीदारी उनकी जड़ों को सुदृढ़ करती है जिससे भेजने वाले समाज के साथ उनको लगाव व्यक्त करने का और साथ ही उत्प्रवासी समुदाय द्वारा अलग प्रकार का लगाव बनाने का अवसर मिलता है।[xl]

स्थानीय त्योहार प्रवासियों के जीवन में महत्वपूर्ण कारक है। यह छुट्टियों में उसके आगमन की घोषणा करता है। पेरुनल (स्थानीय चर्च समारोह) का केन्द्र बिंदु है - रासा या जुलूस। समारोह के दौरान एक नई प्रथा, जो कि व्यापक रूप फैली है, चाँदी या सोने की परत वाला क्रॉस चर्च को दान करना और

जुलूस के दौरान गर्व से इसे लेकर चलना। रासा में चाँदी का क्रॉस लेकर चलना वापिस लौट कर आए प्रवासियों के लिए समुदाय को अपने रूपांतरित रुतबे और गतिशीलता को प्रदर्शित करने का एक बिल्कुल सही साधन है। कैरोलीन ब्रेटेल तर्क करती हैं कि 'कैथोलिक चर्च और इसकी विभिन्न गतिविधियाँ एक परिप्रेक्ष्य प्रदान करती हैं जहाँ वे अपने मूल गाँव वापिस लौटने पर सामाजिक प्रतिष्ठा में परिवर्तित कर सकते हैं।[xli]

जुलूस भी प्रतिस्पर्धा और उपभोग का दिखावा करने वाले क्षेत्र हैं और पदानुक्रम को प्रदर्शित करने के लिए अवसर प्रदान करते हैं।[xlii] केरल में चर्च के जुलूस प्रवासी परिवारों को भौतिकवादी वस्तुओं के प्रदर्शन के कम अवसर प्रदान करते हैं। सामाजिक प्रतिष्ठा मेजबान वातावरण में अर्जित नहीं की जा सकती और केवल अपने मूल गाँव में सामाजिक गतिशीलता के दर्जे का कद्र की जाती है और सामाजिक प्रतिष्ठा प्रदान की जाती है। इस परिप्रेक्ष्य में ग्रामीण ही वे निर्णायक हैं जो कि अप्रवासियों की सफलता को मापते हैं। अत: चाँदी का क्रॉस लेकर चलना प्रभावशाली प्रवासियों को नव अर्जित सामाजिक रुतबा और आर्थिक संपन्नता प्रदर्शित करने हेतु एक सार्वजनिक स्थान प्रदान करता है। यद्यपि यह प्रदर्शित करता है कि व्यक्तिगत रुतबा बढ़ा और सुदृढ़ हुआ है।

मजेदार बात यह है कि एक ऐसा समारोह जिसका अत्यधिक वस्तुकरण हुआ है और प्रदर्शन की जगह बन गया है, वह है अंतिम संस्कार। सीरियाई ईसाई समुदाय में साधारण, सभ्य और अत्यधिक दर्दनाक धार्मिक मामलों को धन तथा सामाजिक रुतबे के प्रदर्शन का अवसर बना दिया गया है। महंगे तथा सजावटी ताबूतों में धूमधड़ाके के साथ शव यात्रा निकाली जाती है, भक्ति गीत गाने के लिए कॉयर को किराए पर लाया जाता है और शवयात्रा के साथ चलता है कारों का काफिला और संस्कार के बाद 'हैवी' खाने के पैकेटों का वितरण होता है। सिर्फ ब्लैक कॉफी पिलाने की परंपरा भी अपना स्थान खोती जा रही है और उसके स्थान पर शानदार लंच आ रहे हैं।

बिशपों के अनुसार, औसत ईसाई अंतिम संस्कार पर अत्यधिक धन खर्च करता है जिसके परिणामस्वरूप एक नया अंतिम संस्कार उद्योग उभर रहा है जिसमें फूल व्यवसायी, ताबूत विक्रेता, केटरर्स, समाचार पत्र और वीडियोग्राफर शामिल हैं। अग्रणी समाचार पत्रों में पहले पन्ने पर निधन संबंधी स्थान के लिए मारा-मारी रहती है। फोटोग्राफ सहित ऐसी एक घोषणा के लिए मलयाला मनोरमा (स्थानीय दैनिक) में 150,000 रु. की लागत आती है। यहाँ तक कि निर्धन और गैर-प्रवासियों ने महंगे ताबूतों, जिन्हें स्वर्ग पेटी कहा जाता है, खरीदने में धनवानों की नकल करनी शुरु कर दी है। स्वर्ग पेटी एक सजीला महंगा ताबूत होता है जिसे चीन से आयात किया जाता है और इसे प्रतिष्ठा और रुतबे का संकेत मान लिया गया है। एक स्थानीय पादरी रेवरेंड जॉर्ज ठाकरन बताते हैं कि 'विगत में भजन गाने के लिए बहुत से मित्र और संबंधी एकत्र होते थे, शोक संतप्त घर में बाईबिल पढ़ी जाती थी, अब इसका स्थान पेशेवर और महंगे कॉयर और गायन समूहों ने ले लिया है।

इसके अलावा, अंतिम संस्कार सेवा की प्रथा की वीडियोग्राफी करवाना केरल के ईसाई समुदाय का एक अन्य अनूठा कार्य है। यह प्रथा प्रवास के संबंध में शुरु हुई थी। प्रारंभ में यह समारोह विदेश में रह रहे बच्चों के लिए किया जाता था जो कि अंतिम संस्कार में शामिल नहीं हो पाते थे। हालाँकि, समय के साथ-साथ यह परिवार के सम्मान और प्रतिष्ठा के प्रचार का साधन बन गया। सोशल मीडिया के आने से अंतिम संस्कार के कुछ घंटों में ही इसे जनता के लिए अपलोड कर दिया जाता है। डॉ. मोहन वर्गीज, जो कि एक स्थानीय कॉलेज में पढ़ाते हैं, कहते हैं 'आजकल अंतिम संस्कार में स्थानीय एमएलए, नगर पालिका परिषद के सभापति, राजनेता और बिशप का भाग लेना रुतबे और प्रतिष्ठा का संकेत माना जाता है। अब अंतिम संस्कार और अधिक व्यापक हो गए हैं और इसमें वीडियोग्राफी ने चार चांद लगा दिए हैं।

निष्कर्ष

नई धार्मिक प्रथाओं के आगमन और जीसीसी देशों से प्रेषण केरल में, जिसमें ईसाइयों की लंबे समय से उपस्थिति रही है, सीरियाई ईसाई की स्थिति में परिवर्तन ला रहे हैं। मेजबान देशों में सीरियाई ईसाई समुदायों में धर्म और आध्यात्मिक अभिमुखीकरण केरल के समाज में सामुदायिक पहचान, कट्टरपंथी धार्मिक समूहों के विस्तार, गॉडमैन और उपासना पद्धति के उदय तथा उपासना के नए रूपों के उभारने में कट्टरता को उकसा रहे हैं। खाड़ी प्रवासी और उनके परिवार भेजने वाले समाज में सामाजिक गतिशीलता और प्रतिष्ठा अर्जित करने के लिए धर्म का सहारा ले रहे हैं। मेजबान विन्यास में प्रवासियों के जीवन में आध्यात्मिक पुनर्संरचना ने आध्यात्मिकता के लिए तृष्णा को सुदृढ़ कर दिया है और इस प्रकार सीरियाई ईसाई समुदाय में 'संपन्नता ईसोपदेश' का सिद्धांत गहरी जड़ें जमा रहा है। पारंपरिक पूर्वी और पदानुक्रम प्रकृति वाले सीरियाई चर्च का स्थान ढीली संरचना वाले 'नव-पेंटेकोस्टलवाद' और 'वाणिज्यिक ईसाईयत' ले रहे हैं। नव-पेंटेकोस्टल चर्चों की परा-राष्ट्रीय प्रकृति ने केरल के समाज के धार्मिक क्षेत्र में प्रत्यक्ष प्रभाव डाला है और डायस्पोरा नेटवर्क होम लैंड चर्चों के पुनर्गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। सामाजिक प्रेषण का प्रभाव धार्मिक क्षेत्र में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है और केरल में ईसाईयत के अमेरिकी संस्करण के लिए खाड़ी संबंध प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी है।

खाड़ी प्रवास ने शायद सीरियाई ईसाइयत की पारंपरिक प्रकृति को भंग किया है और आध्यात्मिकता के अधिक समावेशी, कट्टर और उपभोक्तावादी संस्करण का उदय किया है। धार्मिक कृत्य और समारोह गतिशीलता दिखाने और परिवार के सम्मान को सुदृढ़ करने का स्थान बन गए हैं। केरल में धर्म का उपयोग प्रवास से अर्जित आर्थिक पूंजी को रूपांतरित करके मूल समाज में सामाजिक प्रतिष्ठा, रुतबे और वैधता अर्जित करने के लिए कार्यनीति प्लेटफॉर्म के रूप में और केरल से संबंध बनाए रखने और मूल समुदाय में प्रवासियों के सुगम प्रवेश में सहायता के रूप में हो रहा है। अन्य शब्दों में, धार्मिक क्षेत्रों का उपयोग प्रवासियों द्वारा नव अर्जित सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता का प्रदर्शन और सामंतवादी वर्ग संरचना के ध्वंस में हो रहा है। प्रेषण का व्यापक प्रवाह तथा नव अर्जित सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता के प्रदर्शन को केरल में धार्मिक कृत्यों और समारोहों के वस्तुकरण के कारण के रूप में देखा जा सकता है। स्थानीय धार्मिक क्षेत्र को खाड़ी प्रवासियों की आर्थिक गतिशीलता के मूल्यांकन का निर्णायक बना दिया

गया है और इससे अक्सर विद्यमान वर्ग पदानुक्रम भंग होता है। महत्वाकांक्षी नव धनाढ्य प्रवासी 'विगत' को मिटाने और पूर्ववर्ती उच्च वर्ग के रुतबे तक उठने के लिए आध्यात्मिकता और धर्म पर असाधारण रूप से निर्भर हो रहे हैं।

---

[i] राजन, एस. इरुदया और के.सी. ज़कारिया (संपा.)(2012) केरला'ज़ डेमोग्राफिक फीचर: इश्यूज़ एंड पॉलिसी ऑप्शन, नई दिल्ली: एकेडमिक फाउंडेशन

[ii] रामचंद्रन, सुधा (2013) "साउदी'ज़ निताक़त लॉ: ट्रबल फॉर इंडियन एक्सपाट्स", द डिप्लोमेट, 25 अप्रैल

[iii] इ इकनॉमिक टाइम्स (2014) "केरला'ज़ फॉरेन रेमिटेंसेज़ एक्सीड रु. 75,000 करोड़, 9 जनवरी

[iv] ज़कारिया, के.सी. (2012) और एस. इरुदया राजन, *केरला'ज़ गल्फ कनैक्शन, 1998-2011: इकनॉमिक एंड सोशल इम्पैक्ट ऑफ माइग्रेशन,* नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वैन

[v] ज़कारिया, के.सी. और अन्य (2006) *रिटर्न एमिग्रेंट्स इन केरला*, नई दिल्ली, मनोहर बुक्स

[vi] ज़कारिया, के.सी. (2006) *द सीरियन क्रिश्चियंस ऑफ केरला: डेमोग्राफ़िक, सोश्यो-इकनॉमिक ट्रांज़िशन इन द ट्वेंटीएथ सेन्चुरी,* हैदराबाद, ओरिएंट लोंगमैन

[vii] कुरियन प्रेमा (2002), *केलाइडोस्कोप एथनिसिटी: इंटरनेशनल माइग्रेशन एंड द रीकंस्ट्रक्शन ऑफ कम्यूनिटी आईडेंटिटी इन इंडिया,* यूएसए, रटजर्स यूनिवर्सिटी प्रेस

[viii] बाइया रुइज़, लारिज़ा, "रीथिंकिंग ट्रांसनेशनलिज़्म: रीकंस्ट्रक्टिंग नेशनल आइडेंटिटीज़ अमंग पेरुवियन कैथोलिक्स इन न्यू जर्सी", जर्नल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़ एंड वर्ल्ड अफेयर्स, खंड 41, सं. 4 (1999): 95

[ix] वाल्डिंगर, रोजर एंड डेविड फित्जेराल्ड (2000) "ट्रांसनेशनलिज़्म इन क्वेश्चन", अमेरिकन जर्नल ऑफ सोश्योलोजी, खंड 109, सं. 5, मार्च, 1178-79

[x] लेविट पेगी (2004) "रीडिफाइनिंग द बाउंड्रीज़ ऑफ बिलोंगिंग: द इंस्टीट्यूशनल कैरेक्टर ऑफ ट्रांसनेशनल रिलीजस लाइफ", सोश्योलोजी ऑफ रिलीजन, खंड 65, सं. 1

[xi] लेविट पेगी (2003): "यू नो अब्राहम वाज़ रीयलीद फर्स्ट इमीग्रेंट: रिलीजन एंड ट्रांसनेशनल माइग्रेशन", इंटरनेशनल माइग्रेशन रिव्यू, खंड 37, सं. 3

[xii] रूडोल्फ, सूसन और जेम्स पिस्काटोरी (1997), ट्रांसनेशनल रिलीजन एंड फेडिंग स्टेट्स, कोलोराडो, वेस्टव्यू प्रेस, 1997

[xiii] हर्षमैन, चार्ल्स (2004) "द रोल ऑफ रिलीजन इन द ऑरिजिन्स एंड एडेप्टेशन ऑफ इमीग्रेंट्स ग्रुप इन द युनाइटेड स्टेट्स", इंटरनेशनल माइग्रेशन रिव्यू, खंड 38, सं. 3, पृ. 1228

[xiv] यांग.एफ और एच.आर. एबाग़ (2002) "ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ न्यू इमीग्रेंट रिलीजन्स एंड देयर ग्लोबल इम्प्लीकेशंस", अमेरिकन सोश्योलोजिकल रिव्यू, खंड 66, पृ. 278

[xv] वर्टोवेक, स्टीफन (1997) "थ्री मीनिंग्स ऑफ डायस्पोरा एक्ज़ेम्प्लीफाइड अमंग साउथ एशियन रिलीजंस", डायस्पोरा, खंड 6, सं. 3, पृ. 273-75

[xvi] ऑसेला, फिलिपो और केरोलीन ऑसेला (2003) "माइग्रेशन एंड कॉमोडिटाइजेशन ऑफ रिचुअल: सेक्रिफाइस, स्पेक्टेकल एंड कंटेस्टेशन इन केरला", कंट्रीब्यूशन टू इंडियन सोश्योलोजी, खंड 37

[xvii] गार्डनर, केटी (1995) ग्लोबल माइग्रेंट्स: लोकल लाइव्स: ट्रेवल एंड ट्रांसफॉर्मेशन इन रूरल बांग्लादेश, न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिर्विटी प्रेस

[xviii] ऑसेला, फिलिपो और केरोलीन ऑसेला "माइग्रेशन एंड कॉमोडिटाइजेशन ऑफ रिचुअल: सेक्रिफाइस, स्पेक्टेकल एंड कंटेस्टेशन इन केरला", कंट्रीब्यूशन टू इंडियन सोश्योलोजी, खंड 37, 2003

[xix] एबॉग़, हेलेन रोज़ एंड जेनेट साल्ट्ज़मैन शैफेत्ज़ संपा. (2002) रिलीजस क्रॉस बॉर्डर्स: ट्रांसनेशनल इमीग्रेंट्स नेटवर्क्स, वालनट क्रीक, सीए: अल्टामीरा प्रेस

[xx] लेविट पेगी (2001) द ट्रांसनेशनल विलेजर्स, बर्कले, सीए: यूनिवर्सिटी ऑफ केलिफोर्निया प्रेस

[xxi] लेविट, 2004

[xxii] ज़कारिया, के.सी. *द सीरियन क्रिश्चियंस ऑफ केरला: डेमोग्राफ़िक, सोश्यो-इकनॉमिक ट्रांज़िशन इन द ट्वेंटीएथ सेन्चुरी,* हैदराबाद, ओरिएंट लोंगमैन, 2006

[xxiii] तदैव

[xxiv] मैथ्यू, सी.पी. और एम.एम. थॉमस (2005) द इंडियन चर्चेज़ ऑफ सेंट थॉमस, नई दिल्ली: कैम्ब्रिज प्रेस

[xxv] ज़कारिया, 2006

[xxvi] ज़कारिया, 2006

[xxvii] ज़कारिया, 2006

[xxviii] ज़कारिया, 2006

[xxix] शराफ़, निहाल "क्रिश्चियंस एन्जॉय रिलीजस फ्रीडम: चर्च-स्टेट रिलेशंस एक्सीलेंट", अरब टाइम्स, अप्रेल 15 (2005)

[xxx] तदैव

[xxxi] इंटरनेशनल रिलीजस फ्रीडम रिपोर्ट, यूएस डिपार्टमेंट ऑफ स्टेट, अक्तूबर 26, 2009, http://www.state.gov/j/drl/rls/irf/2009/127351.htm

[xxxii] शराफ़, निहाल, उपर्युक्त

[xxxiii] शेन, डेनियल "कुवैत'स इमेज टारनिश्ड बाय चर्च फियास्को", अरबियन बिजनेस.कॉम, अप्रैल 8, 2012, http://www.arabianbusiness.com/kuwait-s-image-tarnished-by-church-fiasco-453105.html

[xxxiv] लोंग्वा, एन्ह न्गा, वाल्स बिल्ट ऑन सैंड-माइग्रेशन, एक्सक्लूजन एंड सोसायटी इन कुवैत, कोलोराडो: वेस्ट व्यू प्रेस, 1997, पृ. 46

[xxxv] लेविट, 2003

[xxxvi] कुरियन, प्रेमा (2014) "द इम्पैक्ट ऑफ इंटरनेशनल माइग्रेशन ऑन होम चर्चेज़: द मार्थोमा सीरियन क्रिश्चियन चर्च इन इंडिया", जर्नल फॉर द साइंटिफिक स्टडी ऑफ रिलीजन, 53(1)

[xxxvii] किर्कपेट्रिक, डेविड डी (2006) "फॉर ईवेंजेलिकल्स, सपोर्टिंग इज़राइल इज गॉड'स फॉरेन पॉलिसी", द न्यूयॉक टाइम्स, 14 नवंबर

[xxxviii] रॉबर्टसन, पैट (2014) "व्हाय ईवेंजेलिकल क्रिश्चियंस सपोर्ट इज़राइल",

[xxxix] लिंगेन्थल, लुकास (2012) "पेंटेकोस्टलिज़्म इन ब्राजील: चर्चेस, बिजनेस एंड पॉलिटिकल पार्टीज़, केएएस इंटरनेशनल रिपोर्ट्स, 1 जनवरी

[xl] लेविट, पेगी, 2003, पृ. 855

[xli] ब्रेटेल, केरोलीन (2003) "एमिग्रेशन, द चर्च एंड द रिलीजस फेस्टा इन द नॉदर्न पुर्तगाल", इन केरोलीन ब्रेटेल (संपा.) एंथ्रोपोलोजी एंड माइग्रेशन: एस्से ऑन ट्रांसनेशनलिज़्म, एथनिसिटी एंड आइडेंटिटी, वालनट क्रीक, सीए: अल्टामीरा प्रेस

[xlii] राज, सेल्वा जे (2008) "पब्लिक डिस्प्ले, कम्यूनल डिवोशन: प्रोसेसन एट ए साउथ इंडियन केथोलिक फेस्टीवल", इन क्नुत ए जैकबसन (संपा.) साउथ एशियन रिलीजंस ऑन डिस्प्ले: रिलीजस प्रोसेसन इन साउथ एशिया एंड इन द डायस्पोरा, न्यूयॉर्क, राउटलेज

संदर्भ

बाइया रुइज़, लारिज़ा, "रीथिंकिंग ट्रांसनेशनलिज़्म: रीकंस्ट्रक्टिंग नेशनल आइडेंटिटीज़ अमंग पेरुवियन कैथोलिक्स इन न्यू जर्सी", जर्नल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़ एंड वर्ल्ड अफेयर्स, खंड 41, सं. 4 (1999): 95

बेली, सूसन (1992) सेंट्स, गोडेसेज़ एंड किंग्स: मुस्लिम एंड क्रिश्चियन्स इन साउथ इंडियन सोसायटी, 1700-1900, कैम्ब्रिज, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस

ब्रेटेल, केरोलीन (2003) "एमिग्रेशन, द चर्च एंड द रिलीजस फेस्टा इन द नॉदर्न पुर्तगाल", इन केरोलीन ब्रेटेल (संपा.) एंथ्रोपोलोजी एंड माइग्रेशन: एस्से ऑन ट्रांसनेशनलिज़्म, एथनिसिटी एंड आइडेंटिटी, वालनट क्रीक, सीए: अल्टामीरा प्रेस

ब्रयान, विल्सन एंड जेमी, क्रेसवेल (संपा.)(1999) न्यू रिलीजस मूवमेंट्स: चैलेंज एंड रेस्पांस, लंदन, राउटलेज

केसल्स, एस. एंड एम.जे. मिलर (1995) द एज ऑफ माइग्रेशन: इंटरनेशनल मूवमेंट्स इन द मॉडर्न वर्ल्ड, न्यूयॉर्क, गिल्फोर्ड प्रेस

चिरियांकंदथ, जेम्स (1989) "कम्यूनिटीज़ एट द पोल्स: इलेक्टोरल पॉलिटिक्स एंड द मोबिलाइजेशन ऑफ कम्यूनल ग्रुप्सइन त्रावणकोर" मॉडर्न एशियन स्टडीज़ 27 (3), पृ. 643-665

कॉक्स, हार्वे (2000) फायर फ्रॉम हीवन: द राइज ऑफ पेंटेकोस्टल स्पिरिचुअलिटी एंड द रीशेपिंग ऑफ रिलीजन इन द 21स्ट सेंचुरी

डेम्प्सी, कॉरिने जी (2001) केरला क्रिश्चियन सेंटहुड: कॉलीज़न ऑफ कल्चर एंड वर्ल्डव्यू इन साउथ इंडिया, नई दिल्ली, ओयूपी

एबॉग़, हेलेन रोज़ एंड जेनेट साल्ट्ज़मैन शैफेत्ज़ संपा. (2002) रिलीजस क्रॉस बॉर्डर्स: ट्रांसनेशनल इमीग्रेंट्स नेटवर्क्स, वालनट क्रीक, सीए: अल्टामीरा प्रेस

गार्डनर, केटी (1993) "मुल्ला, माइग्रेशन एंड मिरेकल्स", कंट्रीब्यूशनंस टू इंडियन सोश्योलोजी, खंड 27, सं. 2

गार्डनर, केटी (1995) ग्लोबल माइग्रेंट्स: लोकल लाइव्स: ट्रेवल एंड ट्रांसफॉर्मेशन इन रूरल बांग्लादेश, न्यूयॉर्क: ऑक्सफोर्ड यूनिर्विटी प्रेस

हर्षमैन, चार्ल्स (2004) "द रोल ऑफ रिलीजन इन द ऑरिजिन्स एंड एडेप्टेशन ऑफ इमीग्रेंट्स ग्रुप इन द युनाइटेड स्ट्रेटस", इंटरनेशनल माइग्रेशन रिव्यू, खंड 38, सं. 3, पृ. 1228

जैन, प्रकाश सी (2007) (संपा.) इंडियन डायस्पोरा इन वेस्ट एशिया: ए रीडर, नई दिल्ली, मनोहर प्रकाशन

जेफरी, रॉबिन (1976) द डिक्लाइन ऑफ नायर डॉमिनेंस: सोसायटी एंड पॉलिटिक्स इन त्रावणकोर, 1847-1908, नई दिल्ली, विकास

कावाशिमा, कोजी (1998) मिशनरीज़ एंड ए हिंदू स्टेट: त्रावणकोर, 1858-1936, नई दिल्ली, ओयूपी

किर्कपेट्रिक, डेविड डी (2006) "फॉर ईवेंजेलिकल्स, सपोर्टिंग इज़राइल इज गॉड'स फॉरेन पॉलिसी", द न्यूयॉर्क टाइम्स, 14 नवंबर

कुरियन प्रेमा (2002), *केलाइडोस्कोप एथनिसिटी: इंटरनेशनल माइग्रेशन एंड द रीकंस्ट्रक्शन ऑफ कम्यूनिटी आईडेंटिटी इन इंडिया,* यूएसए, रटजर्स यूनिवर्सिटी प्रेस

कुरियन, प्रेमा (2014) "द इम्पैक्ट ऑफ इंटरनेशनल माइग्रेशन ऑन होम चर्चेज़: द मार्थोमा सीरियन क्रिश्चियन चर्च इन इंडिया", जर्नल फॉर द साइंटिफिक स्टडी ऑफ रिलीजन, 53(1)

लेविट पेगी (2001) बिटवीन गॉड, एथनिसिटी एंड कंट्री: अप्रोच टू द स्टडी ऑफ ट्रांसनेशनल रिलीजन, पेपर प्रेजेंटेड एट वर्कशॉप ऑन "ट्रांसनेशनल माइग्रेशन: कंपेरेटिव पर्सपेक्टिव्स", जून 30-जुलाई 1, प्रिंसटन यूनिवर्सिटी

लेविट पेगी (2003): "यू नो अब्राहम वाज़ रीयली द फर्स्ट इमीग्रेंट: रिलीजन एंड ट्रांसनेशनल माइग्रेशन", इंटरनेशनल माइग्रेशन रिव्यू, खंड 37, सं. 3

लेविट पेगी (2004) "रीडिफाइनिंग द बाउंड्रीज़ ऑफ बिलोंगिंग: द इंस्टीट्यूशनल कैरेक्टर ऑफ ट्रांसनेशनल रिलीजस लाइफ", सोश्योलोजी ऑफ रिलीजन, खंड 65, सं. 1

लेविट पेगी (2001) द ट्रांसनेशनल विलेजर्स, बर्कले, सीए: यूनिवर्सिटी ऑफ केलिफोर्निया प्रेस

लिंगेन्थल, लुकास (2012) "पेंटेकोस्टलिज़्म इन ब्राजील: चर्चेस, बिजनेस एंड पॉलिटिकल पार्टीज़, केएएस इंटरनेशनल रिपोर्ट्स, 1 जनवरी

मैथ्यू, सी.पी. और एम.एम. थॉमस (2005) द इंडियन चर्चेज़ ऑफ सेंट थॉमस, नई दिल्ली: कैम्ब्रिज प्रेस

मैथ्यू जॉर्ज (1989) कम्यूनल रोड टू सेक्यूलर केरला, नई दिल्ली, कन्सेप्ट पब्लिशिंग हाउस

मिलर, आर.ई. (1976) मैपिला मुस्लिम्स ऑफ केरला: ए स्टडी इन इस्लामिक ट्रेंड्स, ओरिएंट लोंगमैन, मद्रास

ऊमन एम.ए. (1993) लैंड रिफॉर्म्स एंड इकनॉमिक चेंज: एक्सपीरिएंस एंड लेसन्स फ्रॉम केरला,एस्सेज़ ऑन केरला इकॉनॉमी, नई दिल्ली, ओयूपी और इंडिया बुक हाउस

ऑसेला, फिलिपो और केरोलीन ऑसेला (2003) "माइग्रेशन एंड कॉमोडिटाइजेशन ऑफ रिचुअल: सेक्रिफाइस, स्पेक्टेकल एंड कंटेस्टेशन इन केरला", कंट्रीब्यूशन टू इंडियन सोश्योलोजी, खंड 37

पनिक्कर, के.एन. (2003) "कम्यूनलाइजिंग केरला" 13 मई, द हिन्दू

---------- (1989) अगेन्स्ट लॉर्ड एंड स्टेट: रिलीजन एंड पीजेंट अपराइजिंग इन मालाबार, 1836-1921, ओयूपी, नई दिल्ली

परकोट, मेरी (2005) "इंडियन नर्सेज़ इन द गल्फ़: टू जेनेरेशंस ऑफ फीमेल माइग्रेशन", पेपर प्रेजेंटेड एट द सिक्स्थ मेडीटेरेनियन सोशल एंड पॉलिटिकल रिसर्च मीटिंग, 16-20 मार्च

राजन, एस. इरुदया और के.सी. ज़कारिया (संपा.)(2012) केरला'ज़ डेमोग्राफिक फीचर: इश्यूज़ एंड पॉलिसी ऑप्शन, नई दिल्ली: एकेडमिक फाउंडेशन

राज, सेल्वा जे (2008) "पब्लिक डिस्प्ले, कम्यूनल डिवोशन: प्रोसेसन एट ए साउथ इंडियन केथोलिक फेस्टीवल", इन क्नुत ए जैकबसन (संपा.) साउथ एशियन रिलीजंस ऑन डिस्प्ले: रिलीजस प्रोसेसन इन साउथ एशिया एंड इन द डायस्पोरा, न्यूयॉर्क, राउटलेज

रामचंद्रन, सुधा (2013) "साउदी'ज़ निताक़त लॉ: ट्रबल फॉर इंडियन एक्सपाट्स", द डिप्लोमेट, 25 अप्रैल

रॉबर्टसन, पैट (2014) "व्हाय ईवेंजेलिकल क्रिश्चियंस सपोर्ट इज़राइल", http://www.patrobertson.com/Speeches/IsraelLauder.asp

---

रूडोल्फ, सूसन और जेम्स पिस्काटोरी (1997), ट्रांसनेशनल रिलीजन एंड फेडिंग स्टेट्स, कोलोराडो, वेस्टव्यू प्रेस, 1997

वास्क्वेज़, मैन्युअल ए. (1999): "पेंटेकोस्टलिज़्म, कलेक्टिव आइडेंटिटी एंड ट्रांसनेशनलिज्म अमंग सेल्वाडोरान्स एंड पेरुवियन्स इन द यूएस", जर्नल ऑफ द अमेरिकन एकेडमी ऑफ रिलीजन, खंड 7, सं. 3, सितंबर,पृ. 630

वर्टोवेक, स्टीफन (2000) द हिन्दू डायस्पोरा: कंपेरेटिव पैटर्न्स, लंदन, राउटलेज

वर्टोवेक, स्टीफन (1997) "थ्री मीनिंग्स ऑफ डायस्पोरा एक्ज़ेम्प्लीफाइड अमंग साउथ एशियन रिलीजंस", डायस्पोरा, खंड 6, सं. 3, पृ. 273-75

वाल्डिंगर, रोजर एंड डेविड फित्जेराल्ड (2000) "ट्रांसनेशनलिज़्म इन क्वेश्चन", अमेरिकन जर्नल ऑफ सोश्योलोजी, खंड 109, सं. 5, मार्च, 1178-79

वीनर, मायरन (1986) "लेबर माइग्रेशन एज़ इन्सीपिएंट डायस्पोराज़" इन गेब्रियल शेफर (संपा.) मॉडर्न डायस्पोराज़ इन इंटरनेशनल पॉलिटिक्स, लंदन, क्रूम हेल्म

यांग.एफ और एच.आर. एबाग़ (2002) "ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ न्यू इमीग्रेंट रिलीजन्स एंड देयर ग्लोबल इम्प्लीकेशंस", अमेरिकन सोश्योलोजिकल रिव्यू, खंड 66

ज़कारिया, के.सी. (2004) और एस. इरुदया राजन, *गल्फ रीविज़िटिड: इकॉनॉमिक कन्सीक्वेन्सेज़ ऑफ एमिग्रेशन फ्रॉम केरला, एमिग्रेशन एंड अनएंप्लॉयमेंट, त्रिवेन्द्रम, सीडीएस वर्किंग पेपर, सं. 363*

ज़कारिया, के.सी. (2012) और एस. इरुदया राजन, *केरला'ज़ गल्फ कनैक्शन, 1998-2011: इकनॉमिक एंड सोशल इम्पैक्ट ऑफ माइग्रेशन,* नई दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वैन

ज़कारिया, के.सी. (2006) *द सीरियन क्रिश्चियंस ऑफ केरला: डेमोग्राफ़िक, सोश्यो-इकनॉमिक ट्रांज़िशन इन द ट्वेंटीएथ सेन्चुरी,* हैदराबाद, ओरिएंट लोंगमैन

●●

<u>आई सी एम के प्रकाशन</u>

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक/ वर्ष
1.	लेबर मार्किट एसेसमेंट इन 6 ईयू कंट्रीज	इंटरनेशनल ऑर्गेनाइज़ेशन फॉर माइग्रेशन (आईओएम) के सहयोग से आईसीएम-2011
2.	इंडिया-ईयू एगेंजमेंट एंड इंटरनेशनल माइग्रेशन: इम्पलीकेशन्स फॉर पालिसी एंड वे फारवर्ड	बसंत पोटनुरू एंड वशिष्ठ सैम, आईसीएम-2012
3.	इंडिया-ईयू मोबिलिटी: बिल्डिंग बांड्स थ्रू रेमिटेंसिस एंड फिलोन्थ्रोपी	पूजा गुहा, भारतीय सांख्यिकीय संस्थान, बंगलौर-2013
4.	अवेयरनेंस एंड इंफोर्मेशन डिस्सेमिनेशन: लेसन्स फ्रांम ए फील्ड पब्लिसिटी कैम्पेन इन दि पंजाब प्रोजेक्ट	परमजीत सहाय, सीआरआरआईडी, चंडीगढ़-2013
5.	इर्रेगुलर माइग्रेशन फ्रॉम इंडिया टू दि ईयू: ऐबिडेंस फ्रॉम पंजाब	वी.के बावरा, पंजाब पुलिस-2013
6.	पैटर्न्स ऑफ माइग्रेशन फ्रॉम पंजाब टू इटली इन दि एग्रीकल्चर/ डेयरी सेक्टर (पंजाब-इटली कॉरीडोर एंड चीज़ मेकिंग)	कैथरीन लुम एंड परमजीत सहाय, ईयूआई एंड सीआरआरआईडी-2013
7.	इंटरनेशनल मोबिलिटी ऑफ नर्सिस फ्रॉम इंडिया (केरल) टू दि ईयू: प्रोस्पेक्ट्स एंड चैलेंजिज विद स्पेशल रेफरेंस टू दि नीदरलैंड्स एंड डेनमार्क	परवीना कोडोथ एंड टीना कुरियाकोस, सेंटर फॉर डेवलपमेंट स्टडीज एंड आईसीएम-2013
8.	वर्किंग विद दि डायसपोरा फॉर डेवलपमेंट: पॉलिसी पर्सपेक्टिक्स फ्रॉम इंडिया	दीदार सिंह, फार्मली, एमओईए-2013
9.	बैकग्राउंड पेपर ऑन रेमिटेंसिस फ्रॉस दि जी सी सी टू इंडिया: ट्रेंड्स, चैलेंजिस एंड वे फारवर्ड	टी एल एस भास्कर, आईसीएम-2013
10.	इंस्ट्रूमेंट्स ऑफ एंगेजमेंट: असेसिंग इंडियाज पीआईओ एंड ओसीआई स्कीम्स	सोहाली वर्मा, आईसीएम-2014

11.	कल्चरल कंटिन्यूटी एंड आइडेंटिटी: ए स्टडी ऑफ सूरीनामी हिन्दुस्तानीज़	लीमानुनगला लोंगकुमेर, आई सी एम-2014
12.	एथेनिसिटी एंड डायसपोरिक आइडेंटिटी	मोहन गौतम, लीडेन यूनिवर्सिटी, दि नीदरलैंड्स-2014
13.	गल्फ माइग्रेशन, सोशल रेमिटेंसिस एंड रीलिजन:दि चेंजिंग डायनेमिक्स ऑफ केरल क्रिश्चियंस	गिनु जाचारिया ओमेन-2015
14.	इंडियन माइग्रेंटस इन म्यांमार: इमर्जिंग ट्रेंडस एंड चैलेंजिज	मेधा चतुर्वेदी-2015

प्रवासन के लिए भारत केन्द्र, 2016

प्रवासन के लिए भारत केन्द्र (आईसीएम)

द्वारा प्रकाशित

प्रवासन के लिए भारत केन्द्र

विदेश मंत्रालय

कमरा संख्या-1011 अकबर भवन,

यशवन्त पैलेस, चाणक्यपुरी, नई दिल्ली-110021

दूरभाष:- +91-11-24675341.

ईमेल:-icm.moia@gmail.com

वेबसाइट: http://www.mea.gov.in/icm.htm